चाका या पहिया है; पाणि पद भी विशेष्य है उसका अर्थ हाथ है। इन दोनों की समास होने से चक्रपाणि यह एक पद हुआ। इस से चक्र और हाथ, इन दोनों का कुछ अर्थ न निकलने के कारण नारायण रूप अर्थ का बोध होता है। अतएव यह बहुव्रीहि समास है और चक्रपाणि पद विशेष्य पद है।

इस समास में যার, যাতে, যা, দ্বারা इत्यादि पद व्यवहार किये जाते हैं। যে या যাহা प्राय: व्यवहृत नहीं होते। जैसे;

পীত অম্বর যার, সে পীতাম্বর অর্থাৎ কৃষ্ণ।
বৃহৎ কায় যার, সে বৃহৎকায়।
জিত ইন্দ্রিয় যাহা কর্ত্তৃক, সে জিতেন্দ্রিয়।
স্বচ্ছ তোয় আছে যাতে, সে স্বচ্ছতোয়।
পাণিতে চক্র যার, সে চক্রপাণি।
নষ্ট মতি যার, সে নষ্টমতি।
মহৎ আশয় যার, সে মহাশয়।
ন অন্ত যার, সে অনন্ত।
ন আদি যার, সে অনাদি।

नोट (१) बहुव्रीहि और कर्मधारय समासमें महत् शब्द पहिले होनेसे "महत्" की जगह "महा" हो जाता है। जैसे;

মহৎ বল যার, সে মহাবল।

(२) बहुव्रीहि और कर्मधारय समास का पहला पद स्त्रीलिंग का विशेषण हो तो वह पुंलिङ्ग की भाँति हो जाता है। जैसे ;

দীর্ঘা যষ্টি = দীর্ঘ যষ্টি।

স্থিরা মতি = স্থির মতি।

यहाँ "यष्टि" शब्द स्त्रीलिङ्ग है और "दीर्घा" उसका विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग है ; किन्तु समास होने से विशेषण दीर्घा स्त्रीलिंग होनेपर भी पुंलिङ्ग की भाँति "दीर्घ" हो गया। इसी भाँति "स्थिरा" का "स्थिर" हो गया।

(३) समास में "न" इस अव्यय के बाद स्वरवर्ण होने से "न" के स्थान में "अन" हो जाता है लेकिन "न" के बाद व्यञ्जन वर्ण होनेसे "न" के स्थानमें "अ" हो जाता है। जैसे ;

ন + অন্ত = অনন্ত।

ন + আদি = অনাদি।

ন + জ্ঞান = অজ্ঞান।

ন + সংস্থান = অসংস্থান।

यहाँ "न" के बाद "अ" स्वर आ गया ; इससे "न" के स्थान में "अन" लगाया गया ; इसी भाँति तीसरे उदाहरण में "न" के बाद "ज्ञा" व्यञ्जन आ गया ; इस लिये "न" के स्थानमें "अ" लगाया गया।

(४) बहुव्रीहि समासमें परस्थित आकारान्त शब्द अकारान्त हो जाता है। जैसे ;

নিঃ নাই দয়া যার, সে নির্দ্দয় ।

নিঃ নাই লজ্জা যার, সে নিলর্জ্জ ।

पहिले उदाहरणमें "दया" शब्द के अन्तमें "आ" है लेकिन समास होने से "आ" का "अ" हो गया यानी "दया" का "दय" हो गया । इसी भाँति और समझ लो ।

(५) समास के पूर्व्वपद के "नकारान्त" होनेपर "नकार" का लोप हो जाता है । जैसे ;

রাজন্-পুত্র = রাজপুত্র ।

আত্মন্ কৃত = আত্মকৃত ।

समास में युस्मद् और अस्मद् शब्द यदि पहले आवें, तो एक बचनमें उनके स्थानमें क्रमशः "त्वत्" और "मत्" हो जाते हैं । जैसे;

তোমার কৃত = ত্বৎকৃত ।

আমার পুত্র = মৎপুত্র ।

अव्ययीभाव ।

अव्यय पद पहले बैठने पर जिसकी समास हो उसको अव्ययीभाव कहते हैं । जैसे ;

মাসে মাসে = প্রতিমাস ।

গৃহে গৃহে = প্রতিগৃহ ।

ক্ষণে ক্ষণে = প্রতিক্ষণ ।

কুলের সমীপে = উপকূল।

দিন দিন = প্রতিদিন।

ভিক্ষার অভাব = দুর্ভিক্ষ।

সুখের অভাব = অসুখ।

বিধিকে অতিক্রম না করিয়া = যথাবিধি।

গ্রহের সদৃশ = উপগ্রহ।

বনের সদৃশ = উপবন।

वाक्य रचना।

जिस पद समूह के द्वारा सम्पूर्ण अभिप्राय प्रकाश होता है उसे "वाक्य" कहते हैं। जैसे ;

(১) ঈশ্বর সকল করিতেছেন।

(২) বায়ু বহিতেছে।

(৩) হরি পুস্তক পড়িতেছে।

(৪) বৃষ্টি হইতেছে।

वाक्य के अन्तर्गत जो शब्द होते हैं उनको रीतिमत यथास्थान स्थापित करनेको "वाक्यरचना" कहते हैं।

वाक्य-रचना के समय पहले कर्त्ता और उसके बाद क्रिया पद रखा जाता है। जैसे ;

বৃষ্টি পড়িতেছে।

প্রভাত হইল।

সূর্য্য উদয় হইয়াছে।

नोट (१) कर्त्ता जिस पुरुष का होता है, क्रिया पद भी उसी पुरुष का होता है, बचन-भेद से क्रिया के रूप में भेद नहीं होता। जैसे ;

(১) { আমি যাইতেছি
আমরা যাইতেছি

(২) { তুমি যাইতেছ
তোমরা যাইতেছ

(৩) { সে যাইতেছে
তাহারা যাইতেছে

पहली उदाहरणमें "आमि" एकवचन और "आमरा" बहुवचन है ; किन्तु दोनोंकी क्रिया एक ही है। दूसरेमें "तुमि" एकवचन और "तोमरा" बहुवचन है लेकिन दोनोंकी क्रिया एक ही है। "आमि" और "आमरा" उत्तम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइनेछि" है और "तुमि" और "तोमरा" मध्यम पुरुष हैं। इनकी क्रिया "जाइनेछ" है। पुरुषके और होनेसे क्रिया भी बदल गयी।

नोट (२) जिस वाक्यमें उत्तम और मध्यमपुरुष किंवा प्रथम और उत्तम पुरुष अथवा प्रथम, मध्यम और उत्तम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, उस वाक्यमें उत्तम पुरुष की क्रिया ही व्यवहृत होगी। जैसे ;

আমি ও তুমি দেখিতেছিলাম।
তোমাতে ও আমাতে বসিব।
হরি ও আমি সেখানে যাইব।
আমি, তুমি ও হরি ইহা পড়িয়াছিলাম।

नोट (३) जहाँ प्रथम और मध्यम पुरुष एक क्रिया के कर्त्ता हों, वहाँ मध्यम पुरुष की ही क्रिया प्रयोग करनी होगी। जैसे ;

তুমি ও হরি সেখানে ছিলে।
তাহারা ও তোমরা ইহা দেখিয়াছিলে।
তাহাতে ও তোমাতে একত্র খাইয়াছ।

नोट (४) ऐसे वाक्योंमें सब का कर्त्तृपद एक ही प्रकार के बचन का व्यवहार करना चाहिये। আমি ও তোমরা যাইব, আমি ও তাহারা দেখিতেছি, इस भाँति के वाक्य नहीं हो सकते। अगर ऐसा होगा तो अलग अलग क्रिया व्यवहार की जायगी।

क्रिया के सकर्म्मक या द्विकर्म्मक होनेसे क्रिया के ठीक पहले कर्मपद बैठेगा। जैसे;

আমি হরিকে দেখিলাম।
তাহারা পুস্তক পড়িতেছে।
যদু তাহাকে পুস্তক দান করিয়াছে।

पहले उदाहरणमें "हरिके" यह कर्म पद है और वह अपनी क्रिया "देखिलाम" के पहिले बैठा है। दूसरेमें पुस्तक कर्मपद है और वह क्रिया पड़ितेछे के पहिले बैठा है। इसी तरह तीसरेमें "ताहाके" और "पुस्तक" ये दो कर्मपद हैं और वे दोनोंही अपनी क्रिया "दान करियाछे" के पहले बैठे हैं।

असमापिका क्रिया समापिका क्रिया के पहले बैठेगी; असमापिका और समापिका क्रियाका कर्त्ता एक होगा और इन दोनों क्रियाओंके <u>कर्म</u> <u>करण</u> <u>विशेषण</u> प्रभृति पद इन दोनों क्रियाओं के पहले बैठेंगे। जैसे;

হরি পুস্তক লইয়া পড়িতে লাগিল।
শশী এখানে বেদ পড়িতে আসিতেছে।
তিনি গৃহ হইতে বহির্গত হইয়া হৃষ্টমনে বিদ্যালয়ে প্রবেশ করিলেন।

विशेषण पद विशेष्य के पहले बैठता है। जैसे ;

সুশীলা বালিকা।

বুদ্ধিমান বালক।

বহুদর্শী বৃদ্ধ।

पहले उदाहरण में "सुशीला" विशेषण पद है और वह अपने विशेष्य "बालिका" के पहले बैठा है। इसी भाँति और उदाहरण समझ लो।

नोट—अगर दो या दो से ज़ियादा विशेषण पद व्यवहार करने हों तो उन सब विशेषण पदोंके बीचमें संयोजक (जोड़नेवाला) अव्यय नहीं व्यवहार करना चाहिये। जैसे ;

মহামান্য ঋষিশ্রেষ্ঠ ব্যাস।

সত্যবাদী ধর্ম্মাত্মা রাজা যুধিষ্ঠির।

यहाँ "व्यास" शब्द के "महामान्य" और "ऋषिश्रेष्ठ" दो विशेषण हैं। लेकिन दोनों विशेषणों के बीच में "और" या "व" इत्यादि संयोजक अव्यय नहीं रखे गये। उसी तरह दूसरे उदाहरण में भी समझ लो।

क्रिया का विशेषण क्रिया के पहले ही बैठता है; किन्तु क्रिया सकर्मक होने से प्रायः कर्म पद के पहले बैठता है। जैसे ;

তিনি অত্যন্ত বেগে গমন করিলেন।

রাম উচ্চৈঃস্বরে হরিকে ডাকিল।

पहले उदाहरण में "गमन करिलेन" क्रिया है और "अत्यन्त वेगे" उसका विशेषण है और वह क़ायदे के माफ़िक़ अपनी क्रिया के पहले बैठा है। दूसरे में

"डाकिल" सकर्मक क्रिया है और "उच्चैःस्वरे" उसका विशेषण है। "हरिके" कर्मपद है। क्रिया विशेषण यहाँ "हरिके" कर्मपद के पहले बैठा है।

दो या दो से अधिक पद, वाक्यांश अथवा वाक्यों के एक संग प्रयोग करने पर इन के बीच में संयोजक अव्यय, अर्थात् এবং, ও, কিংবা, আর बैठाने चाहिये। जैसे ;

হরি এবং রাম পড়িতেছে।

হস্তী, অশ্ব, গো ও ছাগ চরিতেছে।

রাম সর্ব্বদা লেখে এবং পড়ে।

ऊपर के नियमानुसार ही অথবা, কিংবা, বা, प्रभृति वियोजक अव्यय भी व्यवहार किये जाते हैं। जैसे ;

রাম অথবা হরি আসিবে।

সে পড়িবে কিংবা লিখিবে।

তুমি বা আমি করিব।

वाक्य के पहले ही सम्बोधन पद बैठता है ; उस सम्बोधन पद के ठीक पहले सम्बोधन चिन्ह হে, অহে, অরে प्रभृति अव्यय बैठाये जाते हैं। कभी कभी इनके न बैठानेसे भी काम चल जाता है। जैसे ;

হে জগদীশ, তুমিই সকলের কর্ত্তা।

ওহে মহেশ, এখানে এস।

অরে! তুই এখন যা।

রাম, তুমি আজ খেলা করিওনা।

सम्बन्ध पद के बाद ही सम्बन्धी पद (जिसके साथ संम्बन्ध हो) बैठाया जाता है। जैसे;

ঈশ্বরের মহিমা।

দুঃখীর ভগ্ন কুটীর।

यहाँ "ईश्वरेर" यह सम्बन्धीपद है; क्योंकि ईश्वर के साथ महिमा का सम्बन्ध है।

करण पद कर्त्तृपदके बाद और कर्म प्रभृति पदों के पहले बैठता है। जैसे;

তিনি অস্ত্র দ্বারা এই বৃক্ষটি ছেদন করিলেন।

হরি যষ্ঠি দ্বারা বৃক্ষ হইতে ফল পাড়িল।

यहाँ "अस्त्र द्वारा" यह करण पद है यह "तिनि" कर्त्तृपद के बाद और "वृक्षटि" कर्मपद के पहले बैठा है इसीतरह दूसरे उदाहरण को समझ लो।

जिन सब अर्थों में अपादान कारक होता है उन सब अर्थ-बोधक पदोंके पहले अपादान पद बैठता है। जैसे;

তিনি কুকর্ম্ম হইতে বিরত হইয়াছেন।

जो जिसका अधिकरण पद होता है, वह उसके पहले बैठता है; कभी कभी बाद भी बैठता है। जैसे;

তাহার হস্তে পুস্তক আছে।

গাত্রে কোন শীতবস্ত্র নাই।

———

वक्तव्य।

हमने यहाँ तक बँगला व्याकरण में प्रवेश मात्र करने की राह दिखाई है। इससे हिन्दी जाननेवालों को बँगला भाषा सीखने में सुगमता होगी। जिन्हें बँगला व्याकरण के अन्यान्य विषय जानने हों, वे वृहत् बँगला व्याकरण देखें।

हिन्दी बँगला शिक्षा ।

द्वितीय खण्ड ।

अनुवाद विषय ।

पहिला पाठ ।

ছিল = था

সেখানকার = वहाँका

রাজার = राजाका

তাঁর = उनका

তত = उतना

গৌরব = प्रतिष्ठा, महिमा

অথচ = और

করিতেন = करते थे

এত = इतना

হওয়া = होनेका

সেই = उसी

যত = जितने

ছিলেন = थे

সকলের চেয়ে = सबकी अपेक्षा

পণ্ডিতদের = पण्डितोंके

মধ্যে = बीचमें

হইলে = होनेपर

মীমাংসা = फैसिला

কেও = कोई

সীতা ।

(১)

মিথিলা নামে এক রাজ্য ছিল। সেখানকার রাজার নাম ছিল জনক। তাঁর রাজ্য তত বড় ছিল না, বড় রাজা বলিয়াও তাঁর তত গৌরব ছিল না। সকল বড় বড় রাজাই তাঁকে খুব মান্য করিতেন—খুব খাতির করিতেন। তাঁর এত মান হওয়ার অনেক কারণ ছিল।

সেই সময় যত বড় বড় রাজা ছিলেন, রাজা জনক সকলের চেয়ে বিদ্বান্ ছিলেন,—সকলের চেয়ে জ্ঞানী ছিলেন। সকল শাস্ত্র তাঁর কণ্ঠস্থ ছিল। পণ্ডিতদের মধ্যে তর্ক হইলে, তিনি তার মীমাংসা করিতেন। তাঁর মীমাংসাই শেষ মীমাংসা,—তাঁর বাক্যই বেদ বাক্য—তাঁর উপর কথা বলিবার আর কেউ ছিল না।

सीता।

(१)

मिथिला नामक एक राज्य था। वहाँ के राजा का नाम जनक था। उनका राज्य उतना बड़ा नहीं था, बड़े राजा होनेके कारणही उनकी उतनी प्रतिष्ठा नहीं थी। सब बड़े बड़े राजा उनका खूब मान करते थे—खूब ख़ातिर करते थे। उनका इतना मान होने के अनेक कारण थे।

उस समय जितने बड़े बड़े राजा थे, राजा जनक सभोंको

अपेक्षा विद्वान् थे,—सबको अपेक्षा ज्ञानी थे। सारे शास्त्र उनके कण्ठस्थ थे। पण्डित लोगोंके बीचमें वाद विवाद होनेपर, वे उसको मीमाँसा करते थे। उनको मीमाँसा ही अन्तिम मीमाँसा थी,—उनका वाक्य ही वेदवाक्य था—उनके ऊपर बात कहने वाला और कोई नहीं था।

दूसरा पाठ।

তাই = वही,
শুধু = केवल
কি = क्या
যেমন = जैसा
তেমন = वैसा
কোন = किसी
পড়িলে = पढ़नेसे
বড় বড় = बड़े बड़े
পরামর্শ = सलाह
নিতেন = लेते थे
বীরত্বও = वीरत्व भी
তাঁহার = उनकी
না = नहीं
করিয়া = करके
কোন = कोई
তাঁকে = उसको
হটাইতে = हटाते
পারেন = सकता
নাই = नहीं
নয় = नहीं
সেকালে = उस समय.
মত = अनुसार, समान
যখন = जब
বসিতেন = बैठते थे
পরিতেন = पहिरते थे
আর = और
থাকিতেন = रहते थे

(২)

শুধু কি তাই—তিনি যেমন বিদ্বান্, তেমনি বুদ্ধিমান্ ছিলেন। কোন বিপদে আপদে পড়িলে অনেক বড় বড় রাজাও তাঁর পরামর্শ নিতেন। বীরত্বও তাঁর কম ছিল না। যুদ্ধ করিয়া কোন রাজাই তাঁকে হটাইতে পারেন নাই।

কেবল তাই নয়—সেকালে তাঁর মত ধার্ম্মিক মুনিঋষিও খুব কম ছিল। রাজা হইয়াও তিনি ভোগবিলাসী ছিলেন না। যখন রাজাসনে বসিতেন, কেবল তখন রাজপোষাক পরিতেন। আর সব সময় মুনিঋষির ন্যায় থাকিতেন। সর্ব্বদা জপ, তপ ব্রত, নিয়ম পালন করিতেন।

(२)

केवल इतना ही क्या—वे जैसे विद्वान्, वैसेही बुद्धि-मान भी थे। किसी विपत्ति आफतमें पड़ने पर बहुतसे बड़े बड़े राजा भी उनकी सलाह लेते थे। वीरता भी उनकी कम न थी। लड़कर कोई राजा भी उनको हटा नहीं सकता था।

केवल इतना ही नहीं—उस समयमें उनके समान धार्म्मिक ऋषिमुनि भी बहुत कम थे। राजा होकर भी वे भोग-विलासी नहीं थे। वे जब राज-आसन पर बैठते थे सिर्फ उस समय राजाकी पोषाक पहिरते थे ; और सब समय ऋषिमुनिकी भाँति रहते थे। सदा जप, तप, व्रत, नियम, पालन, करते थे।

तीसरा पाठ।

উদ্দেশে = उद्देश्यसे	গৃহী = गृहस्थ
কাজ = काम	আবার = और, फिर, दूसरी बार
কতই = कितना ही	থাকিয়া = रहकर
আমোদ = प्रसन्नता	তাহা = वह
হইত = होती थी	করিয়াছিলেন = किया था
তিনি = वे, वह	অথচ = और भी
হইয়াও = होकर भी	পাকা = पक्के
বলিয়া = इससे, इस कारणसे	খেলোয়ার = खिलाड़ी
লোকে = मनुष्य, सर्वसाधारण लोग	তরোয়াল = तलवार
বলিত = कहते थे	ঘুরাইয়া = घुमाकर

---

(৩)

ঈশ্বর উদ্দেশে কাজ করিয়া তাঁর কতই আমোদ হইত। তিনি রাজা হইয়াও মুনিঋষির মত কাজ করিতেন বলিয়া, লোঁকে তাঁকে রাজর্ষি বলিত। রাজর্ষি জনক গৃহকর্ম্মে গৃহী, আবার ধর্ম্মকর্ম্মে সন্ন্যাসী ছিলেন। গৃহে থাকিয়া সন্ন্যাস অসম্ভব হইলেও, তিনি তাহা সম্ভব করিয়াছিলেন। তিনি সকল কাজই করিতেন, অথচ কোন কাজে লিপ্ত ছিলেন না। তিনি খুব পাকা খেলোয়ার ছিলেন, তাই এক হাতে ধর্ম্মের ও আর এক হাতে কর্ম্মের তরোয়াল ঘুরাইয়া সকলকে বিস্মিত করিয়াছিলেন।

(२)

ईश्वरके उद्देश्य से काम करके उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। वे राजा होकर भी ऋषिमुनिकी भाँति काम करते थें, इससे लोग उनको राजर्षि कहते थे। राजर्षि जनक घरके काममें गृहस्थ और धर्मके काममें सन्यासी थे। घरमें रह कर सन्यास असम्भव होनेपर भी उन्होंने उसको सम्भव किया था। वे सभी काम करते थे, परन्तु किसी काममें लिप्त न थे। वे खूब पक्के खिलाड़ी थे, इसीसे उन्होंने एक हाथसे धर्मकी और दूसरे हाथसे कर्मकी तलवार घुमाकर सभोंको विस्मित किया था।

चौथा पाठ ।

দয়ার = दयाकी
বাড়ীতে = घरमें
তের = तेरह
বার = बारह
মাসে = महीनेमें
পাৰ্ব্বণ = पर्व
খোলা = खुला
অন্নসত্র = अन्नक्षेत्र
যে = जो
আসে = आवे
থাকিতে পারে = रह सकता है
এমন = ऐसे
সন্তান = लड़का बाला
জনপরিজন = अपने पराये
জন্য = वास्ते
আকুল = व्याकुल
পান = पाय
তাঁদের = उनका
কিছুতেই = किसीसे भी

সেই = वही　　　কিছু = कुछ
কে = कौन　　　হইল = हुआ

(৪)

জনকের দয়ার সীমা ছিল না। বাড়ীতে বার মাসে তের পার্ব্বণ, উৎসব, আমোদ, আহ্লাদ। আর দান দাতব্য, রাতদিন খোলা অন্নসত্র—যে আসে, সেই খায়। তাঁর রাজ্যে আর দীন দুঃখী কে থাকিতে পারে?

এমন যে রাজর্ষি জনক তাঁর সন্তান নাই। প্রজা, জন-পরিজন ও রাজকর্ম্মচারী সকলেরই মুখ মলিন। রাণী সন্তানের জন্য আকুল। সকলের এই ভাব দেখিয়া, রাজা কোথাও শান্তি পান না। কি করেন—তাঁদের অনুরোধে যাগ যজ্ঞ করিলেন; কিন্তু কিছুতেই কিছু হইল না।

(४)

जनकको दयाकी सीमा न थी। घरमें बारह महीनेमें तेरह पर्व, उत्सव, आमोद, आह्लाद (होता था। और दान, दातव्य, रात दिन खुला अन्नछेत्र, जो आता वही खाता। उनकी राज्यमें और दीन दुःखी कौन रह सकता (था)?

ऐसे जो राजर्षि जनक (थे) उनकी लड़का बाला नहीं (था)। प्रजा, अपने पराये और राजकर्मचारी सभोंका मुँह मलिन (रहता था)। रानी सन्तानकी लिये व्याकुल (रहती थी)। सभोंका यह भाव देखकर, राजा कहीं भी शान्ति नहीं पाते थे। क्या करें—उनकी अनुरोधसे होम यज्ञ किया; परन्तु किसीसे भी कुछ न हुआ।

पाँचवाँ पाठ।

করিবেন = करेंगी	বাগানে = बाग़में
জায়গা = जगह	ফুটিল = खिले, फूटे
ঠিক = ठीक	অলি = भौंरा
হইল = हुई	তুলিবার = तोड़नेके लिये, चुननेके लिये
জিনিষ-পত্র = चीज़ वस्तु	গেলেন = गये
জোগাড় = जोगाड़, जुटाव	মাঝে = बीचमें
হইতে লাগিল = होने लगा	সরোবর = तालाब
পোহাইল = सवेरा होना, बीतना	তিন = तीन
কাক = कौआ	পাড়ে = ओर, किनारेपर
কোকিল = कोयल	মাঠ = मैदान, चरागाह
ডাকিয়া উঠিল = पुकार उठी बोल उठी	আসিয়া পড়িলেন = आ पड़े

(৫)

আবার সকলে সন্তান লাভের জন্য যজ্ঞ করিতে অনুরোধ করিল। রাজর্ষি জনক আবার যজ্ঞ করিবেন। যজ্ঞের জায়গা ঠিক হইল, জিনিষ পত্র যোগাড় হইতে লাগিল।

একদিন রাত পোহাইল, কাক, কোকিল ডাকিয়া উঠিল, বাগানে ফুল ফুটিল, অলি গুন্ গুন্ গাইল। ক্রমে ফুল তুলিবার সময় হইল, রাজর্ষি বাগানে গেলেন। বাগানের মাঝে সরোবর, তাতে ফটিকের মত জল। সূর্য্যদেবের সোণার কিরণ আকাশ

খানি লাল করিয়া সরোবরের জলে খেলিতেছে। সরোবরের তিন পাড়ে ফুলের বাগান, এক পাড়ে খোলা মাঠ। রাজর্ষি ফুল তুলিতে তুলিতে মাঠে আসিয়া পড়িলেন।

(५)

फिर सभोंने सन्तान लाभके लिये यज्ञ करनेका अनुरोध किया। राजर्षि जनक फिर यज्ञ करेंगे। यज्ञकी जगह ठीक हुई, चीज़ वस्तु जोगाड़ होने लगी।

एक दिन रात बीती (सवेरा हुआ), कौवे, कोयल बोल उठे, बाग़में फूल खिले, भौंरे गुन् गुन् गाने लगे। धीरे धीरे फूल चुननेका समय हुआ, राजर्षि बाग़में गये। बाग़के बीचमें तालाब (है), उसमें स्फटिकके समान जल (है)। सूर्यदेवकी सुनहरी किरणें आकाशको लाल करके तालाबके पानीमें खेल रही हैं। तालाबके तीन ओर फूलका बाग़ है एक ओर जानवरोंके चरनेका मैदान (है)। राजर्षि फूल चुनते चुनते उसी मैदानमें आ पड़े।

छठा पाठ।

গাছ = पेड़
উঁচু = ऊँचा
নীচু = नीचा
সে = वह
চাষ করিয়া = हल चलाकर, जोतकर
সদ্যফোটা = तुरत फूटे हुए, तुरत खिले हुए
মেয়ে = लड़की
চাঁদ = चन्द्रमा
জ্যোছনার = चाँदनीका
ননীর = मक्खनका

করা চাই = করনা চাহিয়ে
লাঙ্গল = হল
আসিল = আয়া
গরু = বৈল
যেন = জৈষে, মানো
আলোকিত = রৌশন
উঠিল = উঠা
কালে = কালমেঁ
ছাড়িলেন = ছোড় দিয়া
তাড়াতাড়ি = জল্‌দীষে
ছুটিয়া গেলেন = দৌড়কর গয়ে
কোলে = গোদমেঁ
তুলিয়া নিলেন = উঠা লিয়া
সাড়া পড়িল = কোলাহল মচা
অনায়াস = বিনা পরিশ্রম, যকায়ক

---

(৬)

ঐ খোলা মাঠেই যজ্ঞ হইবে। মাঠের মাঝে মাঝে গাছ পালা, উহার কোন জায়গা উচু কোন জায়গা নীচু। সে সব চাষ করিয়া সমান করা চাই। লাঙ্গল আসিল, গরু আসিল, রাজা নিজেই চাষ করিতে আরম্ভ করিলেন। চাষ করিতে করিতে মাঠ যেন আলোকিত হইয়া উঠিল। দেখেন লাঙ্গলের ফালে সদ্যফোটা পদ্মফুলের মত এক মেয়ে! মেয়ে কি মেয়ে, যেন আকাশের চাঁদ! জ্যোছনার মত রঙ্, ননীর মত শরীর, মেয়ে দেখিয়াই রাজা লাঙ্গল ছাড়িলেন, তাড়াতাড়ি ছুটিয়া গেলেন, মেয়ে কোলে তুলিয়া নিলেন। চারিদিক হইতে লোক জন আসিল, জয় জয়কার পড়িয়া গেল। রাজপুরীতে মহা আনন্দের সাড়া পড়িল। রাজা অনায়াসে সন্তান পাইয়া ভগবানের নিকট কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেন।

(६)

इस खुले मैदानमें ही यज्ञ होगा। मैदानके बीच बीचमें पेड़ पत्ते (हैं), उसकी ज़मीन कहीं ऊँची कहीं नीची है। यह सब हल चलाकर बराबर करनी चाहिये। हल आया, बैल आया, राजाने स्वयं हल चलाना आरम्भ किया। हल चलाते चलाते मैदान मानो आलोकित हो उठा। देखा कि हलके फालमें तुरत फूटे हुए कमलके फूलके समान एक लड़की(है)! लड़की कैसी लड़की (है) मानों आकाशका चन्द्रमा! चाँदनीसा रंग, मखन सा शरीर, लड़की देखकर राजाने हल छोड़ दिया, जल्दी से दौड़कर गये, लड़कीको गोदमें उठा लिया। चारों ओरसे मनुष्य आये, जयजयकार मच गई। राजपुरीमें महा आनन्द का कोलाहल मचा। राजाने अनायास ही सन्तान पाकर ईश्वरके आगे कृतज्ञता प्रकाश की।

सातवाँ पाठ।

সত্যই = सच हाँ, सचमुच
বড় = बहुत
নিয়ে = ले जाकर
অন্দরে = भीतरमें
যত = जितना
তবু = तब भी
বুঝি = मालूम होता है
সাজান হইল = सजी गई
ফটকের = फाटकके
চূড়ায় চূড়ায় = सरपर, नक्कारख़ानेमें
রাজ্যময় = राज्यभरका
মাতিল = मतवाले हुए
আপন আপন = अपना अपना

লতা পাতা = **तोरन बन्दनवार** সাজাইল = **सजाया**
ত্রুটি = **कमी** ভূষিত রহিল = **भूषित रहा**

(৭)

সত্যই রাজর্ষির বড় আনন্দ হইল। আনন্দে মেয়ে নিয়ে রাজা অন্দরে গেলেন। "ভগবানের দান" এই বলিয়া মেয়েটি রাণীর কোলে দিলেন। মেয়ে পাইয়া রাণীর আহ্লাদের সীমা নাই; সে কি যত্ন! সে কি আদর! যত যত্ন করেন, যত আদর করেন, তবু মনে হয়, মেয়ের যত্নের বুঝি ত্রুটি রহিল।

রাজপুরী লতা পাতা পুষ্প পতাকায় সাজান হইল। ফটকের চূড়ায় চূড়ায় বাদ্য বাজিয়া উঠিল। রাজ্যময় উৎসবের ঘোষণা হইল। দেবালয়ে পূজা অর্চ্চনার ধূম পড়িল। রাজপুরী আনন্দময়ী হইয়া উঠিল। রাজার সুখে প্রজার সুখ। প্রজারাও আমোদে মাতিল। আপন আপন ঘর বাড়ী সাজাইল। সাত রাত পর্য্যন্ত নগর আলোকমালায় ভূষিত হইল।

(৩)

सचमुच राजर्षिको बड़ा आनन्द हुआ। आनन्दमें लड़कीको लेकर राजा अन्दरमें गये। "ईश्वरका दान" यह कह कर लड़की रानीकी गोदमें दे दी। लड़की पाकर रानीकी प्रसन्नताकी सीमा नहीं (रही); वह कैसा यत्न! वह कैसा आदर! जितना यत्न करती थीं, जितना ही आदर करती थीं, तब भी मनमें होता था, लड़कीके यत्नमें मालूम होता है कमी हुई।

राजपुरी तोरन बन्दनवार फूल पताकाओं से सजाई गई। फाटकोंके ऊपर ऊपर (नक्कारखानोंमें) बाजे बज उठे। राज्य-भरके उत्सवकी घोषणा हुई। देवालयोंमें पूजा अर्चनाकी धूम पड़ी। राजपुरी आनन्दमयी हो उठी। राजाके सुखसे प्रजाका सुख (है)। प्रजा भी आमोदमें मतवाली (हुई), अपने अपने घर द्वार सजाये। सात रात तक नगर रोशनीकी लड़ीसे भूषित हुआ।

आठवाँ पाठ।

जन्य = वास्ते
গাভী = गायें
অজস্র = बिना रुकावटके, लगातार
জোড়হাতে = हाथ जोड़कर
কামনা = इच्छा
চলিয়া গেল = चले गये
বিবরণ = हाल, समाचार, व्योरा
চারিদিকে = चारों ओर
কথা = बात
রটনা হইল = रटी गई
দলে দলে = दल बाँधकर
আসিতে লাগিল = आने लगी
শিষ্যগণসহ = शिष्यगणोंके साथ
আসিলেন = आये।
প্রাণ ভরিয়া = जी भरकें
যাঁর যাঁর = जिसकी जिसकी
জিনিষ = चीज़

(৮)

রাজা মেয়ের মঙ্গলের জন্য বহু মণি মাণিক্য ও বৎসসহ শত শত গাভী দান করিলেন। নানারাজ্যের দীন দুঃখীদিগকে আশাতীত ধন দিলেন। সাত রাত সাত দিন অজস্র দান চলিল।

রাজ্যে রাজ্যে লোকের অভাব ঘুচিয়া গেল। আশার অধিক দান প্যাইয়া সকলেই যোড়হাতে ভগবানের নিকট রাজকন্যার দীর্ঘজীবন কামনা করিতে করিতে আপন আপন দেশে চলিয়া গেল। রাজর্ষি জনকের কন্যালাভের বিবরণ চারিদিকে প্রচারিত হইল। মেয়ের অসামান্য রূপলাবণ্যের কথাও দেশ বিদেশ রটনা হইল। এই অপূর্ব্ব মেয়ে দেখিবার জন্য দেশ বিদেশের লোক দলে দলে আসিতে লাগিল। শিষ্যগণসহ মুনি ঋষি আসিতে লাগিলেন, দলে দলে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত আসিলেন, মেয়ে দেখিলেন, প্রাণ ভরিয়া আশীর্ব্বাদ করিয়া চলিয়া গেলেন। দলে দলে রাজগণ আসিলেন—মেয়ে দেখিলেন, যার যাঁর যা আদরের জিনিষ ছিল, মেয়েকে উপহার দিলেন, চলিয়া গেলেন।

(৮)

राजाने लड़कीके मंगलके लिये बहुतसे मणि माणिक्य और बछड़े सहित सैकड़ों गायें दान कीं। नाना राज्यके दीन दुःखियोंको आशाके बाहर धन दिया। सात रात सात दिन लगातार दान चलता रहा। राज्य राज्यमें लोगोंका अभाव दूर हुआ। आशासे अधिक दान पाकर सभी हाथ जोड़कर ईश्वरके निकट राजकन्याके दीर्घजीवनकी कामना करते करते अपने अपने देशमें चले गये। राजर्षि जनकके कन्यालाभका समाचार चारों ओर फैल गया। लड़कीके असामान्य रूपलावण्य की बातें देश विदेशमें रटी जाने लगीं। इस अपूर्व लड़कीको देखनेके लिये देश विदेशसे मनुष्य दलके दल

आने लगी। शिष्योंके साथ ऋषिमुनि भी आने लगी। दलके दल ब्राह्मण पण्डित आये, लड़की देखी, जी भरकर आशीर्वाद करके चले गये। दलके दल राजा आये—लड़की देखी, जिसकी जिसकी जो प्यारी चीज़ थी, लड़कीको उपहार दे, चले गये।

नवाँ पाठ।

পর = बाद
চাইল = चाहा
দিয়া = देकर
ফোটা = खिला हुआ
চোখ = आँख
না জানি = नहीं जानता
আরও = और भी
কত = कितना (बहुत)
মানুষের = मनुष्यका
ইনি = ये
পাওয়া যাইবে = पायी जायगी, पाया जायगा
কেন = क्यों
শোনে = सुने
আসে = आवे
ফুরায় = पूरा होना
হইতে = से
আসেন = आती थीं
না হইলে = नहीं तो, न होनेपर

(৯)

তাহার পর প্রজারা। দলে দলে প্রজা আসিয়া মেয়ে দেখিল; যার প্রাণে যা চাইল, মেয়েকে দিয়া আপন ঘরে চলিয়া গেল। রাজসভা হইতে কন্যা অন্তঃপুরে রাণীর কোলে যান; সেখানে মুনিপত্নী, ঋষিপত্নী, মুনিকন্যা, ঋষিকন্যা আসেন, মেয়ে দেখেন, আশীর্ব্বাদ করেন, চলিয়া যান। রাজ্যের

মেয়েরা শতে শতে আসে—মেয়ে দেখে—রূপের কত সুখ্যাতি করে। আহা,রূপ কি রূপ—যেন ফোটা পদ্মফুল, চাঁদের মত মুখ, পদ্মের মত চোখ, ননীর মত শরীর! আহা! এখনই এত রূপ,—বড় হইলে না জানি আরও কত সুন্দর হইবে। মানুষের কি এত রূপ কখনও হয়? নিশ্চয়ই ইনি কোন দেব কন্যা। না হইলে যজ্ঞক্ষেত্রেই বা পাওয়া যাইবে কেন? এত রূপের কথা যে শোনে সেই একবার দেখিতে আসে। একদল আসে, একদল যায়, রাজবাড়ীর লোক আর ফুরায় না।

(६)

उसके बाद प्रजा। दलको दल प्रजाने आकर लड़की देखी; जिसकी मनमें जो चाहा (मनमें जो आया) लड़कीको देकर अपने घर चला गया। राजसभासे लड़की भीतर रानीकी गोदमें गई; वहाँ मुनियोंकी स्त्रियाँ, ऋषियोंकी स्त्रियाँ, मुनिकी कन्याएँ, ऋषिकन्याएँ आईं (उन्होंने) लड़की देखी, आशीर्वाद किया, चली गईं। राज्यकी सैकड़ों स्त्रियाँ आईं—लड़की देखी—रूपकी कितनी सुख्याति की। अहा! रूप कैसा रूप, मानो खिला कमलका फूल। चन्द्रमाके समान मुँह, कमलसी आँखें, मखन सा शरीर। आहा! अभी ही इतना रूप(है)बड़ी होने पर न जाने और भी कितनी सुन्दर होगी। मनुष्यका इतना रूप क्या कभी होता है? निश्चयही ये कोई देवकन्या हैं। नहीं तो यज्ञ-क्षेत्रमें हीक्यों पाई जातीं? इतने रूपकी बात जो सुनता था वही एकबार देखनेको आता था। एक दल आता

था, एक दल जाता था, राज महलके लोग कम नहीं होती थी।

दशवाँ पाठ।

শেষ = समाप्त	ধরিয়া = पकड़कर
হইতে না হইতে = होते न होते	হাটি হাটি = धीरे धीरे
বলিয়া = वास्ते, कारणसे	পা পা = पैर पैर
রাখিলেন = रक्खा	হাটিতে = चलना
কেহ কেহ = कोई कोई	ছেলে মেয়েদের সহিত = लड़के लड़कियोंके साथ
ডাকিতেন = पुकारते थे	খেলায় = खेलमें
হামাগুড়ি = घिसकना घुटरुन चलना	যোগ দিলেন = साथ दिया।
আঙ্গুল = उँगली	

(১০)

এই উৎসব আমোদ শেষ হইতে না হইতেই আবার রাজকন্যার নামকরণ উৎসব আরম্ভ হইল। লাঙ্গলের সীতিতে (ফালে) পাইয়াছেন বলিয়া কন্যার নাম রাখিলেন সীতা। জনকের কন্যা বলিয়া কেহ কেহ তাঁহাকে জানকী বলিয়া ডাকিতেন। সীতা দিন দিন বড় হইতে লাগিলেন। মা বাপের কোল ছাড়িয়া, হামাগুড়ি দিলেন। হামাগুড়ি ছাড়িয়া মা বাপের আঙ্গুল ধরিয়া, হাটি হাটি পা, পা করিতে করিতে হাটিতে শিখিলেন। ক্রমে ক্রমে পুরীর ছেলেমেয়েদের সহিত খেলায় যোগ দিলেন।

(१०)

यह उत्सव आमोद समाप्त होते न होते ही फिर राज-कन्याके नामकरणका उत्सव आरम्भ हुआ। हलके फालमें पाई थी इसलिये लड़कीका नाम रक्खा सीता। जनककी कन्या रहनेके कारण कोई कोई उनको जानकी कह कर पुकारता था। सीता दिनों दिन बड़ी होने लगीं। मा बापकी गोद छोड़कर, घुटनों चलने लगीं। घुटअन चलना छोड़कर, माँ बापकी उँगली पकड़ धीरे धीरे पाँव पाँव (करते करते) चलना सीखा। धीरे धीरे नगरके लड़के लड़कियोंके साथ खेलनेमें भी योग देने लगीं।

ग्यारहवाँ पाठ।

বড় = बहुत, बड़ा
তিনি = वे
নিয়েই = लेकर
কাছে = पास
সঙ্গে = साथ
কখনো = कभी
লেখা পড়া = लिखना पढ़ना
সাংসারিক = संसारके
সকল = सभी
যাগ যজ্ঞ = होमयज्ञ
খেলা = खेल
কাজ কর্ম্ম = काम धन्धा
কতই = कितना ही, बहुत कुछ
পান = पाती थी।
আদেশ = आज्ञा
প্রকার = तरह
করিয়া = करके

(১১)

রাজা আজকাল রাজকার্য্য বড় দেখেন না। তিনি মেয়ে নিয়েই ব্যস্ত। রাজা সভায় যান, মেয়েও তাঁর সঙ্গে যায়। যাগ যজ্ঞ করেন—মেয়ে তাঁর কাছে বসে। তিনি কখনও মেয়ে নিয়ে খেলা করেন, কখনও মেয়েকে লেখা পড়া শিখান। কখনও বা সাংসারিক কাজকর্ম্ম দেখান—কখনও বা ধর্ম্ম উপদেশ দেন। ঈশ্বরভক্তি ও সংযম শিক্ষার জন্য নানা প্রকারের ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করেন। সীতা আগ্রহের সহিত পিতার সকল আদেশ পালন করিয়া কতই যেন সুখ পান।

(११)

राजा आजकल राजके काम बहुत नहीं देखते थे। वह अपनी लड़की को लेकर ही व्यस्त रहते थे। राजा सभा में जाते (तो) उनकी लड़की भी उनके साथ जाती थी। होम यज्ञ करते (तो)—लड़की उनके पास ही बैठती। वे कभी लड़कीके साथ खेलते, कभी लड़कीको लिखना पढ़ना सिखाते। कभी संसारके काम धन्धे दिखाते और कभी धर्मका उपदेश देते थे। ईश्वरकी भक्ति और संयम शिक्षाके लिये कितनी ही तरहके व्रत, नियम पालन की व्यवस्था करते थे। सीता आग्रहसे पिताकी सभी आज्ञा पालन करके बहुत कुछ सुख पाती थीं।

बारहवाँ पाठ।

শ্রান্ত = श्रान्त, थका শুনেন = सुने

হর্ন = হুএ
যখনই = জভী
তখনই = তভী
স্নেহাপ্লুত = স্নেহভরী
ভাষায় = ভাষামেঁ
এই = য়হী
রমণীদের = রমণিয়োঁকী
কাহিনী = কহানী
বলেন = কহতে থে
মনে প্রাণে = জী প্রাণ লগাকর
এবং = ঔর
লক্ষ্য = লক্ষ্য
তাঁহাদিগকে ধরিয়া = উন্হেঁ বৈঠাকর
মিটে = মিটনা
বায়না = বহানা
হইয়া পড়েন = হো পড়তী থী।

(১২)

সুধু ব্রত, নিয়ম পালনের ব্যবস্থা করিয়াই রাজর্ষি ক্ষান্ত হন না, যখনই সময় পান তখনই স্নেহাপ্লুত ভাষায় কন্যাকে সতী, সাবিত্রী, অরুন্ধতী, এই সব পুণ্যবতী আদর্শ সতী রমণীদের কাহিনী বলেন। সীতা মনে প্রাণে সেই সব শোনেন এবং সেই সব দেবী চরিত্রের অনুকরণই তাঁহার জীবনের লক্ষ্য বলিয়া স্থির করেন।

আর শোনেন তপোবনের কথা। তপোবনের কথা শুনিতে সীতার বড়ই আগ্রহ। রাজসভায় মুনি ঋষি আসিলে তাঁহাদিগকে ধরিয়া তপোবনের কথা শোনেন। সেখানে শুনিয়া তাঁর আশা মিটে না। আবার বায়না করিয়া বাবার মুখে শুনিতে চান। বাবার মুখে তপোবনের সেই পবিত্র মধুর কথা শুনিতে শুনিতে বালিকা সীতা তন্ময় হইয়া পড়েন।

(१२)

केवल व्रत, नियम पालनकी व्यवस्था करके ही राजर्षि शान्त नहीं होते थे, जभी समय पाते थे, तभी स्नेहभरी भाषामें लड़कीको सती, सावित्री, अरुन्धती, इन्हीं सब पुण्यवती आदर्श सती रमणियोंकी कहानी कहते थे। सीता मन प्राणसे वही सब सुनती थीं और उन्हीं सब देवी चरित्रोंका अनुकरण ही अपने जीवनका लक्ष्य बनाकर स्थिर करती थीं।

और सुनती थीं तपोवनकी बातें। तपोवनकी बात सुनने में सीताका बड़ा ही आग्रह (था)। राजसभामें मुनि ऋषि आने पर, उन्हें बैठाकर तपोवनकी बात सुनती थीं। वहाँ सुनकर उनका जी न भरता था। फिर बहाना करके पिताके मुँह से सुना चाहती थीं। पिताके मुँहसे तपोवनकी पवित्र मीठी बातें सुनते सुनते बालिका सीता तन्मय हो जाती थीं।

तेरहवाँ पाठ।

ছাড়িয়া = छोड़कर
থাকিলে = रहने
পিছনে = पीछे
সাজি = फूलका चँगेर
চলেন = चलती थी
বসেন = बैठते थे
পড়েন = पढ़ते थे
পুঁথি = पोथी
সেখানে = वहाँ
ছানাটির = बच्चे का
ধরিয়া = पकड़कर
আদর করিলেন = प्यार किया
দুটী = दो
কচী = कोमल, कच्चे
পাতা = पत्ता
আনিয়া = लाकर

খান = खाती थी — খাওয়াইলেন = खिलाया
ততক্ষণ = उतनी देर — কাছে = पास
বিশেষ = जरूरी — একটু = कुछ, थोड़ा
কাজে = काममें

(১৩)

সীতা তাঁর বাবাকে ছাড়িয়া থাকিতে পারেন না। রাজর্ষি ফুল তুলিতে যান—সীতা তাঁর পিছনে সাজি নিয়ে চলেন। জনক পূজা করিতে বসেন—সীতাও ফুল, দূর্ব্বা, চন্দন নিয়ে খেলার পূজায় বসিয়া যান। রাজর্ষি শাস্ত্র পড়েন—সীতাও তাঁর পুঁথি খুলিয়া পড়িতে বসেন। জনক পূজা না করিয়া জল খান না—সীতারও ততক্ষণ উপবাস। রাজা যখন বিশেষ কাজে ব্যস্ত থাকেন, সীতা কাছে থাকিতে পারেন না। তখন সীতা বাগানে যান—সেখানে হরিণ ছানাটির গাল ধরিয়া একটু আদর করিলেন, দুটি কচি পাতা আনিয়া তাকে খাওয়াইলেন।

(१२)

सीता अपने पिताको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। राजर्षि फूल तोड़ने जाते थे—सीता उनके पीछे फूलका चँगेर लेकर चलती थीं। जनक पूजा करने बैठते थे, सीता भी फूल, दूर्वा, चन्दन लेकर खेलकी पूजापर बैठ जाती थीं। राजर्षि शास्त्र पढ़ते थे—सीता भी उनकी पोथी खोलकर पढ़ने बैठती थीं। जनक बिना पूजन किये खाते नहीं थे। सीता का भी उतनी देर उपवास (होता था)। राजा जब

কিসী জরুরী কামমেঁ ব্যস্ত রহতে থে, সীতা আম নহীঁ রহনে সকতী থীঁ। উস সময় সীতা বাগমেঁ জাতীঁ—বহাঁ হরিনকে বচ্চোকা গাল ধরকর প্যার করতীঁ, দো কোমল পত্তে লাকর উসকো খিলাতী থীঁ।

চৌদহবাঁ পাঠ।

দেখিতে = দেখনেকে লিয়ে, দেখনেমেঁ
কিছুতেই = কিসীসে ভী
গুলিকে = (বহুবচন অর্থমেঁ)
চলিলেন = চলী, চলতী থী,
দিগকে
অমনি = য়োঁহী, ঐসী তরহ
ছোলা = চনা
বায়না = জিদ্
মিটেনা = নহীঁ মিটতী থী
যাব = জাউঁগা
জায়গা = জগহ
গহনাগাটী = গহনে কপড়ে
বুলিয়া গেলে = কহ জানেপর
খুলিয়া = খোলকর
ফিরিতে = ফিরনেমেঁ
বেশে = বেশমেঁ
বাধা দেন = মানা কিয়া, বাধা দিয়া
কত = কিতনা হী
খুসী = খুশী
হরিণশিশু গুলিকে = হরিনকে বচ্চোঁকো

(১৪)

রাজর্ষি জনক তপোবন দেখিতে চলিলেন—সীতা অমনি বায়না ধরিলেন, "বাবা! আমি যাব। যাব কি?" অমনি গহনা-গাটি খুলিয়া, ঋষিবালিকার বেশে বাপের পিছনে উপস্থিত। বাপ কত বাধা দেন—কিছুতেই শোনেন না। সীতা তপোবন

দেখিতে যাবেনই। জনক আর কি করেন—নিয়েই চলিলেন। আহা, সীতা তপোবন দেখিয়া কতই খুসী। ঋষিবালিকাদের সঙ্গে খেলা করিয়া তাঁর আমোদ ধরে না। হরিণশিশুগুলিকে দু'গাছি কচি কচি ঘাস, পাখীগুলিকে ছোলা, ঋষিবালক-বালিকা-দিগকে ফল মূল খাওয়াইয়া যে তাঁর আশা মিটে না। তপো-বনই যেন তাঁর সুখের জায়গা। সেখানে গেলে তাঁর আর রাজবাড়ী আসিতে ইচ্ছা করে না। জনক এক দিনের কথা বলিয়া গেলে সীতার জন্য তিন দিনেও ফিরিতে পারেন না।

(১৪)

राजर्षि जनक तपोवन देखने चले—सीतानें यों ही ज़िद पकड़ ली—"पिता! मैं जाऊँगी चलूँ क्या ?" उसी समय गहने कपड़े खोलकर, ऋषि बालिकाके वेशमें पिताके पीछे खड़ी हो गईं। पितानें कितना ही मना किया—कुछ भी न सुना। सीता तपोवन देखने जायँगी ही। जनक अब क्या करें—ले चले। अहा! सीता तपोवन देखकर कितनी खुश (हुईं) ऋषि बालिकाओंके साथ खेल करके उनका जी नहीं भरता था। हरिनके बच्चोंको दो दो नर्म नर्म घास, पक्षियोंको चना और बालक बालिकाओंको फल मूल खिला कर भी उनका जी न भरता था। तपोवनही मानो उनकी सुखकी जगह (थी)। वहाँ जानेपर उन्हें फिर राजमहल आने की इच्छा न होती थी। जनक एक दिनकी बात कह जानेपर सीताके कारण तीन दिनमें भी नहीं फिर सकते थे।

पन्द्रहवाँ पाठ ।

পাইবার = पानेके
পর = बाद
হয় = हुई
রাখেন = रखा, रखा था
বড়টীর = बड़ीका
ছোটটীর = छोटीका
কেও = कोई भी
কাকে = किसको
ফেলিয়া = छोड़कर, फेंककर
ছায়ায় = छायामें, साथमें
আবদার = ज़िद्द
ভাব = प्रेम

(১৫)

সীতাকে পাইবার পর রাণীর একটি মেয়ে হয়, তাঁহার নাম রাখেন উর্ম্মিলা। কুশধ্বজ নামে জনকের এক ভাই ছিলেন, তাঁরও দুইটি মেয়ে—বড়টির নাম মাণ্ডবী, ছোটটির নাম শ্রুত-কীর্ত্তি। তাঁরাও সীতার সঙ্গে জনকের স্নেহের ভাগী। সীতার সঙ্গে তাঁদের বড়ই ভাব। কেউ কাকে ফেলিয়া থাকিতে পারেন না। সীতার ছায়ায় থাকিয়া তাঁরাও সীতার মত হইয়া উঠিলেন। সীতার শিশুকাল গিয়াছে,বাল্যকালও যায় যায়। তাঁর শরীরের কান্তি দিন দিন বাড়িতে লাগিল। এখন আর সে চঞ্চলতা নাই, সে আবদার নাই, সে বায়না নাই। মধুর লজ্জা আসিয়া যেন সব দূর করিয়া দিল।

(१५)

सीताको पाने बाद रानीको एक लड़की हुई, उसका नाम रखा उर्म्मिला। कुशध्वज नामके जनकके एक भाई थे, उनकी भी दो कन्याएँ (थी)—बड़ीका नाम माण्डवी, छोटीका

नाम श्रुतकीर्त्ति (था)। वे भी सीताके साथ जनकके स्नेहकी भागिनी (थीं)। सीताके साथ उनका बड़ाही प्रेम था। कोई किसीको छोड़कर नहीं रह सकती थीं। सीताकी छायामें रहकर वे भी सीताकी भाँति हो गईं।

सीताका बचपन गया है, लड़कपन भी जाने जानेपर है। उसके शरीरकी कान्ति दिनों दिन बढ़ने लगी। अब और वह चंचलता नहीं है, वह ज़िद्द नहीं है, वह बहाना नहीं है। मधुर लज्जा ने आकर मानो सब दूर कर दिया।

सोलहवाँ पाठ।

প্রাণপণে = प्राणभरके

বোনদিগকে = बहिनोंको

ভাল বাসেন = प्यार करती थीं

জনপরিজনে = अपने परायेपर

ভাবনা = चिन्ता, विचार

ভাবেন = विचारे

সখীরা = सखी सब

ছাড়িয়া = छोड़कर

মুহূর্ত্তেও = मुहूर्त्त भर भी

পাড়াপড়সীরা = अड़ोसी पड़ोसी सब

ঘিরিয়া থাকে = घेरे रहती थी।

কারও = किसीका भी

চোখে = आँखमें

লুটিয়া — लोटकर

(১৬)

সীতা এখন প্রাণপণে মা বাপের সেবা শুশ্রূষা করেন, বোন্‌দিগকে প্রাণের সহিত ভাল বাসেন, দাসদাসীদিগকে স্নেহ, জনপরিজনে দয়া করেন। সীতা যেন সকলের সুখ দুঃখের ভাবনা

ভাবেন। সখীরা সীতাকে ছাড়িয়া এক মুহূর্ত্তও থাকিতে পারেন না। পাড়াপড়সীরা সর্ব্বদা তাঁকে ঘিরিয়া থাকে। পশুপক্ষী-দের পর্য্যন্ত সীতাই সব। সীতা যাকে পান, তাকেই প্রাণ দিয়া স্নেহ করেন, যত্ন করেন, আদর করেন। কারও কষ্ট দেখিলে সীতার চোখে জল ধরে না, সীতার আকুলতার সীমা থাকে না। সীতার ব্যবহার দেখিয়া জনক ভাবেন—এ কি? এ কি আমার সীতা? এ তো দেবী! তার শরীরে দেবতার মত জ্যোতিঃ, হৃদয়ে দেব ভাব। যে দেখে সেই যেন চরণে লুটিয়া পড়িতে চায়। আনন্দে রাজর্ষির প্রাণ মন ভরিয়া উঠে।

(१६)

सीता इस समय जी भरके मा बापकी सेवा शुश्रूषा करती थीं, बहिनोंको जैसे प्यार करती थीं, नौकर मज़दूरिनोंपर स्नेह, अपने पराये पर दया करती थीं। सीता मानो सभोंके सुख दुःखको चिन्ता करती थीं। सखियाँ सीताको छोड़कर एक क्षण भी नहीं रह सकती थीं, पड़ोसिने सदा उनको घेरे रहती थीं। पशु पक्षियों तकको सीताही सब कुछ थीं। सीता जिनको पाती थीं, उसको ही जी भरके प्यार करती थीं, यत्न करती थीं, आदर करती थीं। किसीका भी कष्ट देखने से सीताको आँखोंका पानी नहीं रुकता था, सीताको व्याकुलता की सीमा नहीं रहती थी। सीताका व्यवहार देखकर जनक विचारते थे—यह क्या? यह क्या मेरी सीता (है)? यह तो देवी (है)! उसके शरीरपर देवताओंकी भाँति ज्योति (है) हृदयमें देव

भाव (है), जो देखता (है), वही मानो पैरोंपर लोट पड़ना चाहता है। आनन्दसे राजर्षिका प्राण मन भर उठता (है)।

सत्रहवाँ पाठ।

ছড়াইয়া পড়িল = छा गई	দেই = दें
পথে = राहमें	বর = वर
হাটে মাঠে = हाटबाटमें	কাকে = किसको
জাগিয়া উঠিল = जाग उठो	যে = जो
পাইবার = पानेकी	রত্নটী = यह रत्न,
ভাট = भाट	করি = करें
ভাঙ্গিল = टूटा	এইরূপ = इसी तरहको
দিব = दूंगा	ধনুতে = धनुषमें
কার = किसका	ছিলা = चाँप
কাছে = पास	পরাইয়া = पहिनाकर

(১৭)

সীতার অসামান্য রূপ, অসামান্য গুণ; এই রূপ-গুণের কথা জগতে ছড়াইয়া পড়িল। যে রাজ্যেই যাও সীতার রূপ-গুণের কথা। পথে দু'জনে কথা বলিতেছে—সীতার রূপ-গুণের কথা। রাজদরবারে রাজায় রাজায়, হাটে মাঠে প্রজায় প্রজায়, ঘরে ঘরে, কি রাণী, কি গৃহস্থ, কি ভিখারিণী, সকলেই বলে—সেই সীতার রূপ-গুণের কথা।

এই অসাধারণ কন্যারত্ন লাভের আশা, সকল দেশের রাজ-

পুত্রের প্রাণেই জাগিয়া উঠিল। সকলেই সীতাকে পাইবার জন্য জনকের নিকট ভাট পাঠাইতে লাগিলেন। কোন কোন দুষ্ট রাজা বলপূর্ব্বক সীতা লাভের ভয়ও দেখাইলেন। রাজর্ষি জনকের চমক ভাঙ্গিল।

"এমন সোণার চাঁদ মেয়ে কাকে দিব? কে এর যথার্থ আদর করিতে পারিবে? কে এই রত্নের মূল্য বুঝিবে? সীতাকে ছাড়িয়া আমিই বা কেমন করিয়া থাকিব?" এইরূপ চিন্তা তাঁর মনে আসিল। কিন্তু চিন্তা করিয়া কি হইবে?—"মেয়ে তো বিয়ে দিতেই হইবে। এখন কার কাছে দেই? কে উপযুক্ত বর? কাকে দিলে মেয়ে সুখে থাকিবে? যে রত্নের জন্য পৃথিবী লালায়িত, কার এমন বল আছে যে নিজবলে রত্নটী রক্ষা করিতে পারিবে? সেই বলের পরীক্ষাই বা কেমন করিয়া করি?" এরূপ চিন্তা করিতে করিতে হরধনুর কথা তাঁর মনে পড়িল। এ পর্য্যন্ত কেহ সে ধনুতে ছিলা দিতে পারে নাই। তিনি প্রতিজ্ঞা করিলেন—"যিনি হরধনুতে ছিলা পরাইয়া ভাঙ্গিতে পারিবেন, আমি তাঁহাকেই এই কন্যারত্ন দান করিব।"

(১৩)

सीताका असामान्य रूप, असाधारण गुण (है); इस रूप-गुणकी बातें जगत्‌में छा गईं। जिस राज्यमें जाओ सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राहमें दो मनुष्य बातें करते हैं—सीताके रूप-गुणकी बातें (हैं)। राजदरबारमें राजा

राजमें, हाटहाटमें प्रजा प्रजामें, घर घरमें, क्या रानी, क्या गृहस्थ, क्या भिखारिनी, सभी कहते हैं—वही सीताके रूप-गुणकी बातें।

इस असाधारण कन्यारत्न मिलनेकी आशा, सब देशोंके राजकुमारोंके मनमें जाग उठी। सभी सीताको पानेके लिये जनकके पास भाट भेजने लगे। किसी किसी दुष्ट राजाने बलपूर्वक सीतालाभका भय भी दिखाया। राजर्षि जनककी नींद टूटी।

"ऐसी सोनेकी चाँद लड़की किसको दूंगा? कौन इसका यथार्थ आदर कर सकेगा? कौन इस रत्नका मूल्य समझेगा? सीताको छोड़कर मैं ही किस तरह रह सकूँगा?" यही चिन्ता उनके मनमें उठी। परन्तु चिन्ता करके क्या होगा?—"लड़की तो ब्याहनी ही होगी। अब किसके पास दें? कौन उपयुक्त वर (है)? किसे देने से लड़की सुखी होगी? जिस रत्नके लिये पृथिवी लालायित है, किसका ऐसा बल है जो अपने बलसे (उस) रत्नकी रक्षा कर सकेगा? उस बलकी परीक्षा ही किस तरह करें?" इसी तरहकी चिन्ता करते करते हरके धनुषकी बात उनके मनमें आई। अबतक कोई भी उस धनुषमें चाँप न चढ़ा सका। उन्होंने प्रतिज्ञा की—"जो हरके धनुषमें चाँप चढ़ाकर तोड़ सकेंगे, मैं उन्हींको यह कन्यारत्न दान करूँगा।"

अट्ठारहवाँ पाठ।

পণ = प्रण
সব চেয়ে = सबसे
হরধনু = हरका धनुष
ভাঙ্গা = तोड़ना
যাইয়া = जाकर
রব পড়িয়া গেল = धूम मच गई

(১৮)

যেমন অপরূপ মেয়ে, পৃথিবীর সার রত্ন সীতা—তেমন তাঁহার বিবাহের পণও হইল সব চেয়ে কঠিন কাজ—হরধনু ভাঙ্গা।

জনকরাজার প্রতিজ্ঞার কথা রাজ্যে রাজ্যে ঘোষিত হইল। যাঁরা ভাট পাঠাইয়াছিলেন, তাঁরা নিরাশ হইলেন। বীর বলিয়া যাঁদের গৌরব আছে, তাঁরা আনন্দিত হইলেন।

কার আগে কে ধনুক ধরিবে, কে আগে যাইয়া সীতা লাভ করিবে—এই জন্য সকল রাজ্যেই সাজ সাজ রব পড়িয়া গেল।

(१८)

जैसी आश्चर्य्यमयी लड़की, पृथिवीकी सार रत्न सीता (है)—वैसा ही उसके विवाहका प्रण भी हुआ सबसे कठिन काम—हरका धनुष तोड़ना।

जनकराजाके प्रतिज्ञाकी बात राज्य राज्य में घोषित हुई। जिन्होंने भाट भेजे थे वे निराश हुए। वीर रहनेके कारण जिनका गौरव है, वे आनन्दित हुए।

किसके पहिले कौन धनुष उठायगा, कौन आगे जाकर

সীর্তা লাভ করিগা—ইসকে লিয়ে সভী রাজ্যোঁমেঁ তয়্যারিয়োঁকী ধূম মচ গই।

উন্নীসবাঁ পাঠ।

এ পর্য্যন্ত = অবতক

যত = জিতনে

হাতী = হাথী

সিপাই = সিপাহী

সান্ত্রী = হথিয়ারবন্দ সিপাহী, পহরেদার

লোক-লস্কর = মনুষ্য-ফৌজ

ধনুক = ধনুষ

পিট্‌টান্ = ভাগনা

কেউবা = কোই ভী

কাজেই = লাচার হো

একে একে = এক এক করকে

জাঁকজমক = শানশৌকত

আসাই = আনা হী

মহাভাবনায় = বড়ী চিন্তামেঁ

এত সাধের = ইতনী প্যারী

এনে দাও = লা দো

প্রভু = ইশ্বর

---

(১৯)

দলে দলে যত রাজা রাজপুত্র সব আসিল। সঙ্গে হাতী, ঘোড়া, সিপাই-সান্ত্রী, লোক-লস্কর যে কত, তার সংখ্যা নাই। কার আগে কে ধনুক ধরিবে তা নিয়ে বিবাদ। কোন রাজা ধনুক দেখিয়াই পিট্‌টান্, কেওবা তুলিতে চেষ্টা করিলেন, কেউবা তুলিলেন, কিন্তু ছিলা দিতে কেউ পারিল না— ভাঙ্গা ত দূরের কথা। কাজেই একে একে সব চলিয়া গেলেন। সীতার আর বিবাহ হইল না। কেহ কেহ উর্ম্মিলা, মাণ্ডবী, শ্রুতকীর্ত্তিকে বিবাহ করিতে চাহিলেন; কিন্তু সীতার বিবাহ

না হইলে তাঁহাদের বিয়ে কিরূপে হয়? রাজপুত্রদের কেবল জাঁকজমক করিয়া আসাই সার হইল।

রাজর্ষি জনক মহাভাবনার মধ্যে পড়িলেন—আমার এত সাধের মেয়ে, তার বিয়ে হইবে না? আমি কেন এমন প্রতিজ্ঞা করিলাম। আমার দোষেই ত এমন হইল।—রাজা নিজকে নিজে কত নিন্দা করেন। যোড়হাতে সজলনয়নে ভগবানকে ডাকেন, আর বলেন, "প্রভু! সীতার বর কোথায়? এনে দাও প্রভু।"

(१८)

दलके दल जितने राजा, राजपुत्र (थे) सब आये। साथमें हाथी, घोड़ा, सिपाही-पहरेदार, मनुष्य फौज कितनी (थी), उसकी संख्या नहीं (है)। किसके पहिले कौन धनुष उठायगा अब इसीका झगड़ा (है)। कोई राजा धनुष देखकरही भागे, किसीने उठानेकी चेष्टा की, किसीने उठाया, परन्तु कोई भी चाँप न चढ़ा सका—तोड़ना तो दूरकी बात (है)। लाचार हो एक एक करके सब चले गये। सीताका व्याह नहीं हुआ। किसी किसीने उर्म्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्त्तिसे व्याह करना चाहा परन्तु सीताका व्याह बिना हुए, उनका व्याह कैसे हो? राजपुत्रोंका केवल शान शौकतसे आना भर ही हुआ।

राजर्षि जनक बड़ी चिन्तामें पड़े—मेरी इतनी प्यारी लड़की, उसका व्याह न होगा? मैंने क्यों ऐसी प्रतिज्ञा की। मेरे दोषसे ही तो ऐसा हुआ।—राजा अपनी आप कितनी निन्दा

करते थे। हाथ जोड़कर आँखोंमें आँसूभरे हुए ईश्वरको पुकारती और कहती थी—"प्रभु! सीताका वर कहाँ (है)? ला दो प्रभु।"

बीसवाँ पाठ।

ঠাট্টা = ठट्ठा
সই = सखी
কপালে = भाग्यमें
জুটিবার = जुटनेका, मिलनेका
যা হয় = जो हो, जो जी चाहे
বল = कहो
উহা = वह
অদৃষ্ট = भाग्य, कर्म
ফিরিয়া গেলেন = लौट गये

(२०)

সীতার মনে কোন চাঞ্চল্য নাই। কত রাজা আসিলেন,রাজপুত্র আসিলেন, ধনুকে ছিলা পরাইতে না পারিয়া ফিরিয়া গেলেন। কাহারও কথাই সীতার মনে উঠিল না। তা না উঠিলে কি? তবু তাঁহার বিপদ উপস্থিত—সখীদের কাছে আর তাঁর থাকিবার উপায় নাই। তারা তাঁকে কত ঠাট্টা করে। এক এক রাজা আসে, আর অমনি "সই, তোর 'বর এলো' 'বর এলো'" বলিয়া অস্থির করে। যেই চলিয়া যায় অমনি—"সই, তোর কপালে বিয়ে নাই" বলিয়া দুঃখ করিতে থাকে।

ইহাতে সীতার মনে কোন উদ্বেগ নাই। সীতা বলেন, "ভগবান যাঁকে নির্দ্দেশ করিয়াছেন, তিনি আসিলে অবশ্য পণ রক্ষা হইবে। তাঁর ইচ্ছা না হইলে, তোরা যাকে ইচ্ছা ধরিয়া দিলে তা হইবে না।" সখীরা বলে—"তোমার বাবার যেমন

সৃষ্টিছাড়া পণ তাতে যমরাজ ভিন্ন অন্যবর জুটিবার উপায় নাই।"

সীতা বলেন "বাবা আমার ভালর জন্যই পণ করিয়াছেন। তোমরা আমাকে যা হয় বল—বাবার কথা কেন?—মা-বাপ যা করেন, সন্তানের মঙ্গলের জন্যই করেন। তাতে যদি সন্তান দুঃখ পায়, উহা তার অদৃষ্টের ফল।"

(২০)

सीताके मनमें कोई चाञ्चल्य नहीं है। कितने राजा आये, राजकुमार आये, धनुषपर चाँप न चढ़ा सकनेके कारण लौट गये। किसीकी बात भी सीताके मनमें न उठी। उसके नहीं उठनेसे क्या (हुआ)? तब भी उनकी विपद उपस्थित (है)—सखियोंके पास अब उनके रहनेका उपाय नहीं (है)। वे सब उनसे कितना ठट्ठा करती (हैं)। एक एक राजा आता है, इस तरह "सखी! तेरा "वर आया" "वर आया"" कहकर तङ्ग करती हैं। ज्योंही (वह) चला जाता है त्योंही "सखी, तेरे भाग्यमें विवाह नहीं है" कहकर दुःख करती हैं।

इससे सीताके मनमें कोई उद्वेग नहीं (है)। सीता कहती हैं—"भगवान्‌ने जिसको निर्दिष्ट किया है उनके आनेपर अवश्य प्रणकी रक्षा होगी। उनकी इच्छा न होनेपर, तुम सब जिसको चाहो (उसको) देनेसे तो न होगा।" सखी कहती हैं —"तुम्हारे पिताकी जैसी दुनियासे बाहर प्रतिज्ञा है, उससे यमराज भिन्न दूसरा वर मिलनेका उपाय नहीं है।"

सीता कहती थीं—"पिताने मेरे भलेके लिये ही प्रण किया

है।" तुम सब मुझे जो चाहो कहो—पिताकी बात क्यों (कहती हो)? मा बाप जो करते हैं सन्तानके मंगलके लिये ही करते हैं। उससे यदि सन्तान दुःख पाय (तो) यह उसके भाग्यका फल है।"

इक्कीसवाँ पाठ।

प्रकाण्ड = बहुत बड़ा
বাড়ী = मकान
তোরণ = फाटक
কারুকার্য্যে = कारीगरीके कामसे
খচিত = खचा हुआ
চওড়া = चौड़ा
পাশে = ओरमें
বিকালবেলা = तीसरेपहर
উড়িয়া = उड़कर
বেড়াইতেছে = घूमती है
বাতাস = हवा
চুপি চুপি = चुपचाप
পালাইতেছে = भागती है
ডুবিতেছে = डूबती है
উঠিতেছে = उठती है उतराती है
ঢেউয়ে ঢেউয়ে = तरङ्गोंपर, हिलोरोंपर
গড়া = बनाया हुआ, गढ़ा हुआ।
তাড়া খাইয়া = धक्का खाकर
রাঙ্গা = रंगीन

(২১)

রাজর্ষি জনকের প্রকাণ্ড বাড়ী। সম্মুখের তোরণটি বেশ সুন্দর। নানা কারুকার্য্যে খচিত। তোরণের বাহিরে চওড়া রাস্তা। রাস্তার দুই পাশে সুন্দর ফুলের বাগান। বিকাল বেলা বাগানে নানাবিধ ফুল ফুটিতেছে; অলিগণ ফুলের মধু পাইবার জন্য গুন্ গুন্ করিয়া উড়িয়া বেড়াইতেছে। বাতাস

ফুলের মধু চুরি করিয়া, চুপি চুপি পালাইতেছিল, পশ্চিম দিকে রাঙ্গা রবির তাড়া খাইয়া যেন নদীর জলে পড়িয়া গেল। জলের উপর দিয়া দৌড়িতে দৌড়িতে—একবার ডুবিতেছে আবার উঠিতেছে। ঢেউয়ে ঢেউয়ে এক রবি যেন শত রবি হইয়া তার পিছনে পিছনে ছুটিতেছে।

তোরণটি বেশী উচ্চ নয়। তার সামনে ফুলের বাগান। কাতারে কাতারে ফুলের গাছ। গাছে গাছে ফুল আর ফুলের কলি—কোনটি ফুটিয়াছে, কোনটি ফোটা ফোটা হইয়াছে। এই খানি সীতার আপন হাতে গড়া ফুলবন। সাঁঝের ধূসর আঁধার আসিবার আগেই রোজ সীতা ফুলবনে দেবীর মত বোন্‌দিগকে সাথে লইয়া গাছে গাছে জল দিতে আসেন। আজও আসিয়াছেন। জল দেওয়া শেষ হইয়াছে। সীতার হাতের জল পাইয়া গাছগুলি যেন আনন্দে হাসিয়া উঠিয়াছে।

(২১)

राजर्षि जनकका मकान बहुत बड़ा (है)। सामनेका फाटक बहुत सुन्दर (है)। बहुतसे कारीगरोंके कामसे खचा हुआ (है)। फाटकके बाहर चौड़ा रास्ता (है)। रास्तेके दोनो तरफ़ सुन्दर फूलका बाग़ (है)। तीसरे पहरको बाग़में बहुत तरहके फूल खिलते हैं; भौंरे फूलका मधु पीनेके लिये गुन् गुन् करके उड़ते फिरते हैं। हवा फूलका मधु चोरी करके, चुपचाप भागती थी, (परन्तु) पश्चिम ओर रंगीन सूर्य्यका धक्का खाकर मानो नदीके जलमें गिर पड़ी।

पानीके ऊपरसे दौड़ती दौड़ती—एकबार डूबती है, फिर उतराती है। ढेह्ल ढेह्लपर एक रवि मानो सौ रवि होकर उसके पीछे पीछे दौड़ते हैं।

फाटक बहुत ऊँचा नहीं (है); उसके सामने ही फूलका बाग़(है)। क़तारसे फूलके पेड़(हैं)पेड़ पेड़में फूल और फूलकी कलि—कोई खिली है और कोई खिलने खिलनेपर है। यह सीताका अपने हाथका बनाया हुआ फूलबन है। सन्ध्याका धूसर अँधेरा आनेके पहिलेही रोज़ सीता फूलबनमें देवीकी भाँति बहिनोंको साथ लेकर पेड़ पेड़में जल देने आती हैं। आज भी आई हैं। पानी देना समाप्त हो गया है। सीताके हाथका जल पाकर पेड़ मानो आनन्दसे हंस उठे हैं।

सावित्री।

बाईसवाँ पाठ।

ঘুরে ঘুরে = घूम घूमकर	আড় = आड़, अन्तराल
দেখাতে = दिखाने	পাছে = पीछे
লাগিলেন = लगी	হারাতে হয় = खोना पड़ता है
ফিঙ্গে = एक प्रकारकी चिड़िया	দিকে = तरफ़
ময়ুর = मोर	এক দৃষ্টিতে = टकटकी बाँधकर
নাচছে = नाचता है	চেয়ে আছেন = देख रही हैं
আলো = रोशनी	হাওয়ায় = हवामें
দেখ্‌ছতো = देखती हो तो?	পাতা = पत्ता

আজ ওকি দেখবেন = आज वह क्या देखेंगी
নড়ে = हिलता है
বুক = कलेजा
কেঁপে উঠে = काँप उठता है
ছিনিয়ে = छीनकर
শুক্‌নো = सूखा हुआ
নিতে = लेजानेके लिये
ঝরে পড়ে = झड़कर गिरता है
আস্‌চে = आता है

সাবিত্রী।

(২২)

এ-দিক ও-দিক ঘুরে' ঘুরে' সত্যবান সাবিত্রীকে বনের শোভা দেখা'তে লাগ্‌লেন। ঐ দেখ, ঐ ফিঙে উড়্‌ছে, অশোক-ডালে ময়ুর নাচ্‌ছে,—ও সাবিত্রি, দেখ্‌ছ তো?—সাবিত্রী আজ ও-কি দেখ্‌বেন! চোখের আড় কর্‌লে পাছে হারাতে হয়, এই ভয়ে তিনি স্বামীর মুখের দিকে একদৃষ্টিতে চেয়ে আছেন। হাওয়ায় গাছের পাতা নড়ে,—সাবিত্রীর বুক কেঁপে উঠে! শুক্‌নো পাতা ঝ'রে পড়ে—সাবিত্রী ভাবেন, ঐ বুঝি কে সত্যবানকে ছিনিয়ে নিতে আসচে!

(२२)

इधर उधर घूम घूम कर सत्यवान सावित्रीको बनकी शोभा दिखाने लगे। यह देखो, यह फिङ्गे उड़ता है, अशोककी डालपर मोर नाचता है—ऐ सावित्री, देखती हो तो?—सावित्री आज वह क्या देखेंगी! आँखकी ओट करनेपर खोना पड़ेगा इसी भयसे वह स्वामीके मुँहकी ओर एकदृष्टिसे देख रही हैं। हवासे पेड़का पत्ता हिला,—सावित्रीका

कलेजा काँप उठा ! सूखा पत्ता झड़कर गिरनेसे—साधिवी यह समझकर कि कोई सत्यवानको छीन लेनेके लिये आता है चिन्तित हुई ।

तेईसवाँ पाठ ।

हाथ = हाथ
आपन = अपना
চেপে ধরেন = दबा धरती है
ভয় ভয় কর্‌ছে = डर मालूम होता है
কাঠ = लकड़ी
কেটে = काटकर
চল = चलो
কাটতে = काटनेके लिये
উঠ্‌লেন = उठे, चढ़े
তলায় = नीचे
দাঁড়িয়ে = खड़ी होकर
পানে = ओर
রইলেন = रही
হয়েছে = हुआ है
ডেকে ডেকে = पुकार पुकारकर
নেমে এস = उतर आओ
ফুরিয়ে গেল = बीत गया
আঁধার = अँधेरा
খণ্ডান্‌ জায় = काटी जाय
ব্যথায় = दर्दसे
মাথার = माथेकी
দারুণ = भयानक, जोरकी, कष्टकर
ছটফট = छटपट
ঢলে পড়লেন = ढलक पड़े
দেহ = शरीर
কালি = काला
হয়ে গেছে = हो गया है
মুখ দিয়ে = मुँहसे
ফেনা উঠছে = फेन निकलता है
আঁখির পাতা = आँखकी पलक

(২৩)

অমনি তিনি দ্বিগুণ জোরে স্বামীর হাত আপন হাতে চেপে ধরেন। সাবিত্রী বল্‌লেন—আমার কেমন ভয় ভয় কর্‌চে, তুমি শীঘ্র কাঠ কেটে' ঘরে চল। সত্যবান আর দেরি না ক'রে কাঠ কাট্‌তে গাছের উপর উঠ্‌লেন। গাছের তলায় দাঁড়িয়ে সাবিত্রী স্বামীর মুখের পানে চেয়ে রইলেন। "কাটা ডালের স্তূপ হয়েছে, কাঠের বোঝা ভারী হয়েছে— এখন নেমে এস!" সাবিত্রী গাছের তলা থেকে ডেকে ডেকে বলচেন—নেমে এস, এখন নেমে এস! বেলা যে ফুরিয়ে গেল, বনের পথ আঁধার হ'ল—এখন নেমে এস!

সত্যবান গাছের উপর থেকে এক-পা দু-পা করে নীচে নেমে আস্‌চেন, এমন সময়—বিধির লিপি না খণ্ডান যায়—দারুণ মাথার ব্যথায় ছট্‌ফট্‌ ক'রে তিনি গাছের তলায় ঢ'লে পড়্‌লেন। সাবিত্রী ছুটে' এসে দেখেন—স্বামীর দেহ কালি হ'য়ে গেছে, মুখ দিয়ে ফেনা উঠ্‌ছে, আঁখির পাতা নড়ে না—হায় হায়, এ কি হল!

(২৩)

यह विचार कर उसनी दूने जोरसे स्वामीका हाथ अपने हाथमें चांपकर पकड़ लिया। सावित्रीने कहा—मुझे कैसा भय मालूम होता है, तुम जल्दी लकड़ी काटकर घर चलो। सत्यवान और देर न करके लकड़ी काटनेके लिये पेड़पर चढ़े। पेड़के नीचे खड़ी होकर सावित्री स्वामीके मुँहकी ओर

देखती रहीं। "काटी हुई डालकी ढेर हुई है, काठका बोझा भारी हुआ है—अब उतर आओ!" सावित्री पेड़के नीचेसे पुकार पुकारकर कहती है—"उतर आओ, अब उतर आओ! समय हो गया, बनकी राह अँधेरी हुई, अब उतर आओ!"

सत्यवान पेड़के ऊपरसे एक पैर दो पैर करके नीचे उतरे आते हैं, ऐसेही समय—भाग्यका लिखा हुआ नहीं टाला जाता—माथेके भयानक दर्दसे छटपटाकर वह पेड़के नीचे ढलक पड़े। सावित्रीने दौड़कर देखा—स्वामीका शरीर काला हो गया है, मुँहसे फेन निकल रहा है, आँखकी पलक नहीं हिलती—हाय, हाय, यह क्या हुआ!

चौबीसवाँ पाठ।

এক ধারে = एक ओर	বাদুড় = चमगादड़
দেহ = शरीर	দুলচে = डोलता है
কোণের বধূ = दुलहिन	খসে পড়চে = खिसक पड़ता है
একলা = अकेली	দুপুর = दो पहर
ফেটে = फटकर	কেটে গেল = कट गई
কান্না = रोना	সাড়া = शब्द
উথ্লে = उथलकर	শক্ত = कड़ा
বুক চেপে = कलेजा दबाकर	হ'য়ে = होकर
শেয়াল = सियार	আগলে = बचाये
ডাকচে = पुकारता है, बोलता है	

(২৪)

একধারে কাঠের বোঝা, একধারে স্বামীর দেহ—কোণের বধূ সাবিত্রী এই আঁধার বনে একলা, এখন কি কর্‌বেন! বুক ফেটে তাঁর কান্না উথ্‌লে উঠ্‌ল—জোর ক'রে, তিনি বুক চেপে স্বামীর দেহ কোলে তুলে' বনের ভিতর ব'সে রইলেন।

আঁধার পক্ষের আঁধার রাত। ঘুরঘুট্টি আঁধারের মাঝে শেয়াল ডাক্‌চে, বাদুড় দুল্‌চে, গাছের পাতা খসে পড়্‌চে—সাবিত্রী স্বামীর দেহ বুকে চেপে স্বামীর মূর্ত্তি ধ্যান কর্‌চেন। দেখ্‌তে দেখ্‌তে দুপুর রাত কেটে গেল, তবু তো তাঁর সাড়া নেই—কাঠের মত শক্ত হ'য়ে সাবিত্রী স্বামীর দেহ আগ্‌লে রইলেন।

(२४)

एक ओर काठका बोझा, एक ओर स्वामीका शरीर—दुलहिन सावित्री इस अँधेरे बनमें अकेली इस समय क्या करेंगी! कलेजा फटकर उनको रुलाई आई—जोर करके, कलेजा दबाकर वह स्वामीके शरीरको गोदमें उठाकर बनमें बैठी रहीं।

अँधेरे पखकी अँधेरी रात (है)। घनघोर अँधकारमें सियार बोलता है, चमगादड़ डोलता है, पेड़का पत्ता खिसक पड़ता है—सावित्री स्वामीका शरीर कलेजेसे दबाकर स्वामीकी मूर्त्ति ध्यान करती है। देखते देखते दो पहर रात्रि बीत गई, तब भी तो उनका शब्द नहीं—(सुन' पड़ा है)

काठकी भाँति, कठोर होकर सावित्री स्वामीके शरीरकी रक्षा किये रहीं।

উমা।

पच्चीसवाँ पाठ।

ক্রমে ক্রমে = धीरे धीरे
শিশু = बच्चा
একটু একটু করিয়া = थोड़ा थोड़ा करके
একটুখানি = छोटा, थोड़ा
জ্যোৎস্না পরিপূর্ণ = ज्योति भरा, चाँदनी भरा
সেরূপ = उस तरह
দিন দিনই = दिनों दिन
বাড়িতে লাগিল = बढ़ने लगा
লয় = लेता था
চাঁদপানা = चाँद सरीखा
জোছ্‌না মাখা = ज्योति भरा
বিলাইতেই = बाँटनेकी लिये

(২৫)

ক্রমে ক্রমে শিশু কন্যাটী বড় হইয়া উঠিল। প্রতিপদের চন্দ্র যেমন প্রথম একটুখানি থাকে, আর প্রতিদিনই একটু একটু করিয়া বড় হইয়া জোৎস্না-পরিপূর্ণ ও মনোহর হইয়া উঠে, হিমালয়ের শিশু মেয়েটিও সেরূপ ক্রমে ক্রমে বড় হইয়া উঠিল। দিন দিনই উহার সৌন্দর্য্য বাড়িতে লাগিল। মেয়েটীকে যে দেখে, সেই আদর করে, যে দেখে, সেই কোলে লয়। যেমন চাঁদপানা মুখ, তেমনি জোছ্‌নামাখা শরীর; তা আবার ননীর মত কোমল, এমন মেয়ে কি আর হয়! মনে হয় যেন পৃথি-

বাতে আনন্দ বিলাইতেই ভগবান মেয়েটীকে আনন্দধাম থেকে পাঠিয়ে দিয়েছেন !! হিমালয়ের বাড়ীতে রোজ বন্ধু বান্ধবগণ আসিতে লাগিল। তাহারা ত মেয়ের রূপ দেখিয়া অবাক। পর্ব্বতের মেয়ে কিনা, তাই সকলে আদর করিয়া উহাকে "পার্ব্বতী" বলিয়া ডাকিত।

পার্ব্বতীর মা বাপের কথা আর কি বলিব। পার্ব্বতীকে পেয়ে তাঁহারা যেন হাতে চাঁদ পেয়েছেন। মেয়ের দিকে চাহিলে, তাঁহাদের আন ক্ষুধা তৃষ্ণা থাকে না। এক মিনিট মেয়েটি চোখের আড়াল হইলে মা বাপ যেন অস্থির হইয়া পড়েন।

उमा।

(२५)

धीरे धीरे बच्चा कन्या बड़ी हो गई। प्रतिपदाका चन्द्र जिस तरह पहले छोटासा रहता है और रोज़ रोज़ थोड़ा थोड़ा बड़ा होकर ज्योति भरा और मनोहर हो जाता है, हिमालयकी बच्ची कन्या भी उसी तरह धीरे धीरे बड़ी हो गई। दिनों दिन उसका सौन्दर्य्य बढ़ने लगा। लड़कीको जो देखता (है), वही प्यार करता (है), जो देखता है, वह गोदमें लेता (है)। जिस तरह चाँदसरीखा मुँह, वैसा ही ज्योतिभरा शरीर (है); वह फिर मखनसा कोमल है) ऐसी लड़की क्या दूसरी होती हैं ! मनमें आता है मानो पृथिवीमें आनन्द बाँटनेके लिये ही भगवानने लड़कीको आनन्दधामसे भेज दिया है !! हिमालयके

मकानपर रोज बन्धु बान्धवगण आने लगे। वे तो लड़कीका रूप देखकर अवाक (हो गए)। पर्व्वतकी लड़की है कि नहीं इसीसे सभी प्यार करके उसे "पार्वती" कहकर पुकारते हैं।

पार्वतीके माँ बापकी बात और क्या कहूँगा। पार्वती को पाकर उन्होंने मानो हाथमें चाँद पाया है। लड़कीकी ओर देखने पर उन्हें फिर भूख प्यास नहीं रहती है। एक मिनिट लड़की आँखोंकी ओट होने पर माँ बाप मानो अस्थिर हो जाते हैं।

छब्बीसवाँ पाठ।

बाटी = कटोरी
ঝিনুক = सीपी, चमच
এনে দিলেন = लादिया
পুতুল খেলার = गुड़िया खेलनेका
পুতুল = गुड़िया, पुतली
সাটীনের = साटनका
জামা = कपड़ा, पोषाक
বেগুনে = बैंगनी
ঝল্ মল্ = झिलमिल
বহিয়া চলিয়াছে = बह चली है

সাদা সাদা = सफेद सफेद
বালিগুলি = बालू
রূপার মত = चाँदीके समान
ঝিক্‌মিক্ করে = चमकता था झिलमिलाता था
বালিরাশিতে = बालूकी ढेरमें
পরিবেশন করে = परोसती थी
আধ আধ স্বরে = तोतली भाषामें
বয়স = अवस्था, उम्र

(২৬)

বাপ আদরকরে মেয়ের জন্য সোণার দুধের বাটি

ও হীরার ঝিনুক এনে দিলেন। পার্ব্বতী যখন আধ আধ স্বরে "মা" বলিত, তখন মেনকার আনন্দ দেখে কে। ক্রমে পার্ব্বতীর বয়স ৩।৪ বৎসর হইল। এখন ত পুতুল খেলার সময়। পার্ব্বতীর পুতুলের অভাব কি ?, কত সোণার পুতুল, রূপার পুতুল, ফটিকের পুতুল, আর তাদের কত রকমের জামা। সাটীনের জামা, রেশমের জামা ; লাল, নীল, বেগুনে, কত রঙ্গের জামা, আর তার মাঝে হীরা, মাণিক, ঝল্‌মল্‌ করে। পার্ব্বতী খেলার সাথীদের সঙ্গে পুতুল খেলা করে। পুতুলের বিয়ে হয়, আর কত আমোদ প্রমোদই বা হয়। রাজবাড়ীর পাশ দিয়াই গঙ্গা নদী বহিয়া চলিয়াছে। উহার তীরে সাদা সাদা বালিগুলি রূপার মত ঝিক্‌মিক্‌ করে। পার্ব্বতী সখিগণ লইয়া সেই বালিরাশিতে খেলা করিতে যায়। সোণার হাঁড়িতে বালি দিয়া ভাত রাঁধে, আর পুতুলের বিয়ের সময় সকলকে নিমন্ত্রণ করে খাওয়ায়। বরের বাড়ী হইতে কত লোকজন আসে, পার্ব্বতী সোণার থালে বালির ভাত ও পাতার তরকারী পরিবেশন করে।

(২৬)

बापने प्यार करके लड़कीके लिये सोनेकी दूधकी कटोरी और हीरेका चमच ला दिया। पार्वती जब तोतले स्वरमें "मा" कहती (थी) उस समय मेनकाका आनन्द कौन देखे। धीरे धीरे पार्वतीकी अवस्था तीन चार वर्षकी हुई। अब तो गुड़िया खेलनेका समय (है)। पार्वतीको गुड़ियेका क्या अभाव (है) ? कितनी ही सोनेकी पुतली, चाँदीकी पुतली, स्फटिककी

पुतली और उनको कितने रंगकी पोषाक ; साटनकी पोषाक, रेशमकी पोषाक लाल,नीली,बैंगनी कितने रङ्गकी पोषाक और उसके बीचमें हीरा,माणिक,झिलमिल करता है। पार्वती खेलकी साथिनोंके साथ गुड़िया खेलती है। गुड़ियेका व्याह होता है और कितनी ही हँसी खुशी होती हैं। राजमहलके पास ही गंगानदी बह चली है। उसके किनारेपर सफेद सफेद बालू चाँदीकी तरह झिलमिल करती है। पार्वती सखियोंको लेकर उसी बालूकी ढेरमें खेलने जाती है। सोनेकी हाँड़ीमें बालू डालकर भात सिझाती है और गुड़ियेके व्याहके समय सभोंको निमन्त्रण करके खिलाती है। वरके मकानसे कितनेही मनुष्य आते हैं, पार्वती सोनेकी थालमें बालूका भात और पत्तेकी तरकारी परोसती है।

सत्ताईसवाँ पाठ।

জামাই বাড়ী = जवाँईके घर
কান্না = रोना
খেলাধূলায় = खेल कूदमें
শিখিবার = सीखनेका
গুরুমা = शिक्षिका
ফলা = युक्त अक्षर
বানান = वर्ण-विचार
শেষ = समाप्त
ছবির = तस्वीरकी, तस्वीरदार
বই = किताब
আনিয়া দিলেন = ला दी
সে গুলি = वह सब
হাসে = हँसती थी
গিলিতে চায় = निगलना चाहता है

(২৭)

আর মেয়ে পুতুলটীকে জামাই-বাড়ী নিয়ে গেলে, পার্ব্বতী কান্না আরম্ভ করে। সে দিন রাত্রিতে আর ভাত খায় না। এমনি ভাবে খেলাধূলায় পার্ব্বতীর দিন চলিতে লাগিল। এসব দেখিয়া বাপ মায়ের মনে আর আনন্দ ধরে না। ক্রমে পার্ব্বতীর লেখাপড়া শিখিবার সময় হইল। সে রাজকন্যা, তার ত আর স্কুলে গিয়া পড়িতে হইবে না। পর্ব্বতরাজ বাড়ীতেই গুরুমা রাখিয়া দিলেন। পার্ব্বতী সোণার পাতায় হীরার কলম দিয়া 'ক' 'খ' লিখিতে লাগিল। ছয় মাসের মধ্যেই ফলা, বানান, শেষ হইয়া গেল। এখনত ছবির বই পড়িবার সময়। বাপ আদর করিয়া কত সুন্দর সুন্দর ছবির বই আনিয়া দিলেন পার্ব্বতী সেগুলি দেখে,আর হাসে। কি সুন্দর ছবি! একটা বেঙ কিনা একটা হাতী গিলিতে চায়। বেঙের কি সাহস। পার্ব্বতী ছবি দেখিয়া হাসে, আর মনে মনে ভাবে, বেঙ কি কখনও হাতী গিলিতে পারিবে!

(২৩)

और कन्या गुड़ियाको जवाँईके घर ले जानेपर पार्वती रोना आरम्भ करती है। उस दिन रातको फिर भात नहीं खाती। इसी भावसे खेलकूदमें पार्वतीका दिन बीतने लगा। यह सब देखकर बाप माके मनमें आनन्द नहीं समाता। क्रमसे पार्वतीका लिखना पढ़ना सीखनेका समय हुआ। वह राजकन्या (है), उसे तो स्कूल जाकर पढ़ना न

होगा। पर्वतराजने घरमें ही गुरुआनी रख दी। पार्वती मोनेके पत्तेपर हीरेकी कलमसे 'क' 'ख' लिखने लगी। छः महीनेके बीचमें ही संयुक्त अक्षर और वर्ण-विचार समाप्त हो गया। अब तो तस्वीरदार किताब पढ़नेका समय (है)। पिताने प्यार करके कितनी ही सुन्दर सुन्दर तस्वीरवाली किताब ला दी। पार्वती वह सब देखती और हँसतीं थी। कैसी सुन्दर तस्वीर है! एक बेंग, एक हाथी निगलना चाहता है। बेंगका कैसा साहस है! पार्वती तस्वीर देखकर हँसती (है) और मन ही मन विचारती (है), बेंग क्या कभी हाथी निगल सकेगा।

अट्ठाईसवाँ पाठ।

নানা = बहुतसे	কুমীর = मंगर
রকমের = तरहके	বেঙ্গম = बेङ्ग
ছড়া = पद्य	নাককাটা = नकटा
টিয়ে = तोता	মনোযোগ দিয়া = जी लगाकर
পাখী = पक्षी	দেমাক = अहङ्कार
খুকুরাণী = छोटी लड़की	দুষ্টামি = बदमाशी
গল্প = कहानी	ভালবাসে = प्यार करे

(২৮)

ছবির বইগুলিতে নানারকমের ছড়া ও গল্প আছে। টিয়ে পাখীর ছড়া, খুকুরাণীর বিয়ের ছড়া, কত রকমের ছড়া। আর গল্প? শেয়াল ও কুমীরের গল্প,বেঙ্গম বেঙ্গমীর গল্প, নাককাটা

রাজার গল্প, শীত বসন্তের গল্প, কত গল্পই বা পার্ব্বতী শিখিয়া ফেলিল। পার্ব্বতী খুব মনযোগ দিয়া লেখা পড়া করিত। রাজকন্যা হইলে কি হবে, তার একটুকুও দেমাক ছিল না। সে গুরুমাকে খুব ভক্তি করিত। গুরুমা যাহা বলিতেন, সে তাহাই করিত। পড়ার সময় একটুকুও দুষ্টামি করিত না। কাহারও নিকট মিথ্যা কথা কহিত না। এমন মেয়েকে কে না ভাল বাসে? তোমরাও যদি মন দিয়া লেখাপড়া কর এবং সর্ব্বদা সত্য কথা বল, সকলেই তোমাদিগকে ভালবাসিবে।

(২৮)

तखोरवाली किताबोंमें कितनी तरहकी कविता और कहानी है। तोता पंछीकी कविता, छोटी लड़कीके ब्याहपर कविता, कितनी ही तरहकी कविता (है)। और कहानियाँ? सियार और मगरकी कहानी, बेंग बेंगीकी कहानी, नकटे राजाकी कहानी, शीत वसन्तकी कहानी, कितनी ही कहानियाँ पार्वतीने सीख डालीं। पार्वती खूब जी लगा कर लिखना पढ़ना करती थी। राजकन्या होनेसे क्या होगा, उसको कुछ भी अहङ्कार न था। वह गुरुआनीकी खूब भक्ति करती थी। गुरुआनी जो कहती थीं वही करती थी। पढ़नेके समय कुछ भी बदमाशी नहीं करती थी। किसीसे झूठ नहीं बोलती थी। ऐसी लड़कीको कौन नहीं प्यार करता? तुमलोग भी यदि जी लगाकर लिखना पढ़ना करो और सदा सच बात बोलो, (तो)सभी तुमलोगोंको प्यार करेंगे।

উন্তীসবাঁ পাঠ।

গানও = गाना भी
রাঁধিতে = रसोई बनाना
তখনকার = उस समयकी
ছাড়া = छोड़कर, अलावे
শিখিয়াছিল = सीखा था
বাবুগিরি = बाबुआनी
কাটাইতে = काटते
স্বামীকে = पतिको
ছুটাছুটি = दौड़-धूप
লুকোচুরী = लुक्काचोरी
বাল্যকাল = लड़कपन
যৌবন = जवानी
চলিয়া গেল = बीत गया

(২৯)

পার্ব্বতী যে শুধু লেখাপড়া শিখিয়াছিল, তা নয়। গুরুমা তাকে গানও শিখাইয়া ছিলেন। সন্ধ্যার সময় পার্ব্বতী যখন গুরুমার নিকট গান করিত, তখন তাহার সুমিষ্ট স্বর শুনিয়া সকলে মুগ্ধ হইয়া যাইত। দেবতাও এমন সুন্দর গান করিতে পারেন না। গান ছাড়া পার্ব্বতী রাঁধিতেও শিখিয়াছিল। তখনকার রাজকন্যারা কেবল বাবুগিরি করিয়া দিন কাটাইত না। বিয়ের পর তাহারা হাতে রাঁধিয়া স্বামীকে খাওয়াইত। পার্ব্বতী যে শুধু পুতুল খেলা করিত, তা নয়। অনেক সময় সখীদের সঙ্গে ছুটাছুটি করিত, লুকোচুরি খেলিত, আরও নানা রকমের খেলা খেলিত। ইহাতে তাহার শরীরে যেমন শক্তি হইয়াছিল, তেমন সৌন্দর্য্যেরও বৃদ্ধি হইয়াছিল। এইরূপে পার্ব্বতীর বাল্যকাল চলিয়া গেল এবং যৌবন আসিয়া পড়িল।

(२८)

पार्वतीने केवल लिखना पढ़ना सीखा था, वही नहीं। गुरुआनीने उसको गाना भी सीखाया था। सन्ध्याके समय पार्वती जब गुरुआनीके पास गाती (थी) उस समय उसका मीठा स्वर सुनकर सभी मुग्ध हो जाते थे। देवता भी ऐसा सुन्दर गाना नहीं गा सकते थे। गानेके अलावे पार्वतीने (भोजन) पकाना भी सीखा था। उस समयकी राजकन्याएँ केवल बाबुआनी करके दिन नहीं काटती थीं। विवाहके बाद वे अपने हाथसे पकाकर स्वामीको खिलाती (थीं)। पार्वती केवल गुड़िया खेलती थी सो नहीं। बहुत बार सखियोंके संग दौड़-धूप करती, लुक्का-चोरी खेलती, और भी नाना प्रकारके खेल खेलती थी। इससे उसके शरीरमें जैसी शक्ति हुई थी, वैसा सौन्दर्य्य भी बढ़ गया था। इसी तरहसे पार्वतीका लड़कपन बीत गया और जवानी आ पहुँची।

तीसवाँ पाठ।

বাড়িয়া উঠিল = बढ़ उठा
বিকসিত হইয়া উঠে = खिल उठता है
চেহারা = चेहरा
চিত্রকর = चित्रकार, तस्वीरें बनानेवाला
আঁকিয়া রাখিয়াছে = अङ्कित कर रखी है
পায়ের = पैरकी
অঙ্গুলিতে = उँगलीमें
হাটিয়া যাইত = हट जाती
বোধ হইত = मालूम होता था

আল্‌তার রস = [illegible]তিকা রস হাঁটু = ঘুটনে
বাহির হইতেছে = নিকল রহা সরু = পতলা
হৈ শিরিষ = সিরীস
মাটীতে = মিট্টীমেঁ কুসুম = ফূল
স্থলপদ্ম = ভূমিকমল

(৩০)

পার্ব্বতীর শরীর স্বভাবতঃই সুন্দর। এখন যৌবনকাল—তাহার শরীরের লাবণ্য যেন আরও বাড়িয়া উঠিল! সূর্য্যের কিরণে পদ্ম যেমন বিকসিত হইয়া উঠে, নবযৌবনের উদয়ে পার্ব্বতীর শরীরও তেমনি অপূর্ব্ব শোভা ধারণ করিল। তখন তাহার চেহারা দেখিলে মনে হইত যে, কোন চিত্রকর যেন এক খানা ছবি আঁকিয়া রাখিয়াছে। পার্ব্বতীর পায়ের অঙ্গুলিতে যে নখ আছে তাহা এমন লাল এবং এমনই উজ্জ্বল যে, সে যখন হাটিয়া যাইত, তখন বোধ হইত যেন নখ হইতে আল্‌তার রস বাহির হইতেছে। আর মাটিতে উহার এমনই জ্যোতিঃ হইত যে, লোকে মনে করিত, মাটিতে বুঝি স্থলপদ্ম ফুটিয়াছে। পার্ব্বতীর হাঁটু দুটি কেমন সুশ্রী, উপরে গোল এবং পরে ক্রমশঃ সরু হইয়া আসিয়াছে। উহাতে লাবণ্যই বা কত! লোকে কথায় বলে যে শিরীষ ফুলের মত কোমল জিনিষ আর কিছুই নাই। কিন্তু পার্ব্বতীর বাহু দুটি শিরিষ কুসুম অপেক্ষাও কোমল।

(৩০)

পার্বতীকা শরীর স্বভাবতঃ হী সুন্দর (হৈ)। অব যৌব-

नका समय (है)—उसके शरीरका लावण्य मानो और भी बढ उठा! सूर्यकी किरणसे कमल जैसे खिल उठता है, नये यौवनके उदयसे पार्वतीके शरीरने भी वैसी ही अपूर्व शोभा धारण की। उस समय उसका चेहरा देखनेसे जीमें आता था कि किसी चित्रकारने मानो एक तस्वीर अङ्कित कर रखी है। पार्वतीके पैरकी उँगलीमें जो नख है वह ऐसा लाल और ऐसा ही उज्ज्वल है कि वह जिस समय चलती थी, उस समय मालूम होता था मानो नखसे अलतेका रस निकल रहा हैं। और मिट्टीमें उसकी ऐसी ज्योति होती थी कि मनुष्य समझते थे कि मिट्टीमें मालूम होता है स्थलपद्म खिला है। पार्वतीके घुटने दोनो कैसे सुन्दर हैं। ऊपर गोल और फिर क्रमशः पतले होते आये हैं। उसमें लावण्य भी कितना (है)! लोग बातोंमें कहते हैं कि सिरीस फूलके समान कोमल पदार्थ और कुछ नहीं (है) परन्तु पार्वतीकी दोनो बाहें सिरीस फूलसे भी अधिक कोमल (हैं)।

इकतीसवाँ पाठ

গলায় = गलेमें
মুক্তাগুলি = मोतियाँ
তুলনা = तुलना, उपमा
ভ্রূ = भौंह
পেছন দিক = पीछेकी ओर
ঘুরিয়া বেড়ান = घूमते फिरते थे
হাঁটিতে হাঁটিতে = घूमते घूमते
ক্ষমতা = बल, शक्ति

চুলের = কীশকী। ফলিত = ফলতা
ঘন = ঘনা ফোটা = বুঁদ

(৩১)

পার্ব্বতীর গলায় মুক্তার মালা। শিশিরের ফোঁটার মত সাদা সাদা মুক্তাগুলি তাহার বুকের উপর ঝক্ ঝক্ করিত। সুন্দর মুখের সহিত লোকে পদ্মের অথবা চন্দ্রের তুলনা দিয়া থাকে। কিন্তু পার্ব্বতীর মুখশ্রীর নিকট চন্দ্র ও পদ্ম উভয়েই পরাজিত। সেই অবধি দিনে চাঁদ উঠে না, আর রাত্রিতে পদ্ম ফোটে না। পার্ব্বতীর চক্ষু দুটি যেমন বিস্তৃত, নাসিকা তেমন উচ্চ এবং ভ্রূদুটি তেমন লম্বা। আর চুলের কথা কি বলিব। ঘন কৃষ্ণ কেশ, তাহা পেছনদিক দিয়া হাঁটু পর্য্যন্ত পড়িয়াছে। যৌবনকালে পার্ব্বতী এতই সুন্দরী হইয়া উঠিল।

দেবতাদের দেশে নারদ নামে একজন বিখ্যাত মহর্ষি আছেন। তিনি সর্ব্বদা ইচ্ছামত এদিক ওদিক ঘুরিয়া বেড়ান। এক দিন হাটিতে হাটিতে তিনি পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের বাড়ীতে উপস্থিত হইলেন। হিমালয় খুব সমাদরে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। তখনকার মুনিঋষিদিগের ভারী ক্ষমতা ছিল। তাঁহারা যাহা বলিতেন, তাহাই ফলিত। হিমালয়ের আদেশে পার্ব্বতী আসিয়া মহর্ষি নারদকে প্রণাম করিল। মহর্ষি পার্ব্বতীকে আশীর্ব্বাদ করিয়া বলিলেন, "দেব-দেব মহাদেব তোমাকে বিবাহ করিবেন, আর তুমি স্বামীর খুব সোহাগিনী হইবে"। মহর্ষির কথা বৃথা হইবার নয়। পর্ব্বতরাজ ভগবান মহাদেবকে জামাতারূপে

পাইবেন ভাবিয়া খুব খুসী হইলেন। বিবাহের বয়স হইলেও পর্ব্বতরাজ পার্ব্বতীর বিবাহের কোন আয়োজন করিলেন না। তিনি জানিতেন মহর্ষির কথাই সত্য হইবে। কাজেই তিনি নিশ্চেষ্ট রহিলেন।

(২১)

पार्वतीके गलेमें मुक्ताकी माला (है)। शिशिरके बूँदकी तरह सफेद सफेद मोतियाँ उसके कलेजे पर चमकती हैं। सुन्दर मुखके साथ मनुष्य कमलकी अथवा चन्द्रकी तुलना दिया करते हैं। परन्तु पार्वतीकी मुखश्रीके सामने चन्द्र और कमल दोनो ही पराजित (हैं)। उसी समयसे दिनमें चन्द्रमा नहीं निकलता और रातमें कमल नहीं खिलता है। पार्वतीकी आँखें दोनो जैसी बड़ी, नाक वैसी ही ऊँची और भौंहें दोनो वैसी ही लम्बी (हैं)। और केशकी बात क्या कहूँगा। घने काले केश, वे पीछेसे घुटनेतक गिरे हैं। यौवनके समय पार्वती इतनी ही सुन्दरी हो गई।

देवताओंके देशमें नारद नामके एक विख्यात महर्षि हैं। वे सदा इच्छानुसार इधर उधर घूमते फिरते (हैं)। एक दिन घूमते घूमते वे पर्वतराज हिमालयके मकानपर उपस्थित हुए। हिमालयने बड़े आदरसे उनकी अभ्यर्थना की। उस समयके मुनि ऋषियोंकी भारी क्षमता थी। वे जो कहते थे, वही फलता था। हिमालयके आदेशसे पार्वतीने आकर महर्षि नारदको प्रणाम किया। महर्षिने पार्वतीको आशी-

र्वाद देकर कहा—"देव-देव महादेव तुम्हें विवाह करेंगे, और तुम स्वामीकी बड़ी ही सोहागिनी होओगी।" महर्षिकी बात झूठी होनेकी नहीं। पर्वतराज भगवान् महादेवको जामातारूपमें पानेके विचारसे बड़े प्रसन्न हुए। विवाहकी अवस्था हो जानेपर भी पर्वतराजने पार्वतीके विवाहकी कोई तैयारी न की। वे जानते थे, (कि) महर्षिकी बात ही सच होगी। इससे वे निश्चेष्ट रहे।

बत्तीसवाँ पाठ।

পূর্ব্বে = पहिले	মাখিলেন = लगाया, मखा
একদা = एक समय	বাঘছাল = बघछल
দূরে থাকুক = दूर रहे	পরিধান = पहिरनेका वस्त्र
বরং = वरन्	পাগল সাজিয়া = पागल सजकर
ঝাঁপ দিয়া = कूदकर	সেই অবধি = तबसे
রাখিলেন = रखी	পাদদেশ = तराईमें

(৩২)

ভগবান্ মহাদেব পূর্ব্বে দক্ষরাজের কন্যা সতীকে বিবাহ করিয়াছিলেন। একদা দক্ষরাজ এক যজ্ঞ আরম্ভ করেন। তাহাতে সকলের নিমন্ত্রণ করা হয়, কিন্তু দক্ষরাজ নিজকন্যা সতী এবং জামাতা মহাদেবকে নিমন্ত্রণ করিলেন না। সতী বিনা নিমন্ত্রণেই পিতার যজ্ঞে উপস্থিত হইলেন। দক্ষ সতীকে অভ্যর্থনা করা দূরে থাকুক, বরং তাঁহার নিকটেই মহাদেবের নিন্দা আরম্ভ করেন। পতিনিন্দা শ্রবণে নিতান্ত দুঃখিত হইয়া সতী

অগ্নিকুণ্ডে ঝাঁপ দিয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। সেই অবধি মহাদেব সংসার বাসনা পরিত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসীর মত দেশ বিদেশে ভ্রমণ করিতে থাকেন। তিনি মাথায় জটা রাখিলেন, শরীরে ভস্ম মাখিলেন, আর বাঘছাল পরিধান করিলেন। এইরূপে পাগল সাজিয়া, তিনি নানাস্থানে ঘুরিতে লাগিলেন। প্রিয়তমা পত্নী সতীর বিরহে তিনি বড়ই কাতর হইয়া পড়িলেন। অবশেষে নানাস্থান পর্য্যটন করিয়া, তিনি হিমালয়ের পাদদেশে আসিয়া উপস্থিত হইলেন। সে স্থানটি অতিশয় নির্জ্জন এবং তপস্যার পক্ষে বেশ উপযুক্ত; সেখানে এক কুটীর বাঁধিয়া তিনি উপাসনা আরম্ভ করিলেন। তাঁহার সঙ্গে অনেকগুলি অনুচর আসিয়াছিল, তাহারাও সেখানে রহিয়া গেল। মহাদেব কি কঠোর তপস্যাই আরম্ভ করিলেন!

(৩২)

भगवान् महादेवने पहिले दक्षराजकी कन्या सतीसे विवाह किया था। एक समय दक्षराजने एक यज्ञ आरम्भ किया। उसमें सभोंका निमन्त्रण किया गया; परन्तु दक्षराजने अपनी कन्या सती और जामाता महादेवको निमन्त्रण नहीं किया। सती बिना निमन्त्रणके हो पिताके यज्ञमें उपस्थित हुईं। दक्षने सतीकी अभ्यर्थना करना तो दूर रहा, वरन् उनके पास ही महादेवकी निन्दा आरम्भ की। पतिनिन्दा सुननेसे अत्यन्त दुःखित हो सतीने अग्निकुण्डमें कूदकर प्राणत्याग किया। तबसे महादेव संसारवासना छोड़

कर संन्यासीके समान देशविदेशमें घूमा करते है। उन्होंने माथेमें जटा रखो, शरीरमें भस्म लगाया और बाघछाल पहिर लिया। इसी तरह पागल सजकर वे नानास्थानमें घूमने लगे। प्रियतमा पत्नी सतीके विरहमें वे बड़े ही कातर हो पड़े। अन्तमें बहुतसे स्थानोंमें घूमकर, वे हिमालयकी तराईमें आ पहुँचे। वह स्थान बड़ा ही निर्ज्जन और तपस्याके लिये अच्छा उपयुक्त (था) ; वहाँ एक कुटी बाँधकर (बनाकर) उन्होंने उपासना आरम्भ की। उनके साथ बहुतसे अनुचर आये थे, वे भी वहाँ रह गये। महादेवने कैसी कठोर तपस्या आरम्भ की !

तेतीसवाँ पाठ।

আগুণের = अग्निका	তাপেই = गर्मीसे ही
জ্বালিলেন = जलाया	পুড়িয়া যাইত = जल जाता
জ্বলন্ত = जलती हुई	আনিয়া দিত = ला देती थी.
হুতাশন = अग्नि	

(৩৩)

খোলা জায়গায় বসিয়া, সামনে এক আগুণের কুণ্ড জালিলেন। উপরে প্রচণ্ড সূর্য্য, চতুর্দ্দিকে জ্বলন্ত হুতাশন! অন্য লোক হইলে আগুণের তাপেই পুড়িয়া যাইত! এরূপ কঠোর অবস্থায় তিনি ধ্যান আরম্ভ করিলেন।

মহাদেব নিজেই ভগবান। তাঁহার ধ্যান করিয়া কত লোক কৃতার্থ হইয়া যাইতেছে। মহাদেব স্বয়ং মঙ্গলময়, তিনি সক-

লের মঙ্গল বিধান করেন। তিনি যে কি জন্য ধ্যান করিতে বসিলেন, তাহা তুমি আমি বুঝিতে পারিব না। দেবতারা যে সকল কার্য্য করেন, তাহা কি তুমি আমি বুঝিতে পারি? মানুষের জ্ঞান বুদ্ধি খুব কম। এই জ্ঞান দ্বারা ভগবানের কার্য্য কলাপের কারণ নির্দ্দেশ করা যায় না।

পর্ব্বতরাজ হিমালয় যখন শুনিতে পাইলেন যে, ভগবান মহাদেব নিজরাজ্যে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছেন, তখন তাঁহার আর আনন্দের সীমা রহিল না। তিনি পশুপতির নিকট উপস্থিত হইয়া বিনীতবচনে তাঁহার অভ্যর্থনা করিলেন। বাড়ীতে ফিরিয়া আসিয়া তিনি পার্ব্বতী ও তাহার জয়া-বিজয়া নামক দুই সখীকে বলিলেন "তোমরা প্রত্যহ যাইয়া দেব-দেব পশুপতির সেবা কর।" পরদিন হইতে পার্ব্বতী পশুপতির সেবায় নিরত হইল। পার্ব্বতী স্ত্রীলোক, যুবতী, এমত অবস্থায় তপস্যাস্থলে গমন করিলে তপস্যার বিঘ্ন হইতে পারে ইহা বুঝিয়াও মহাদেব পার্ব্বতীকে নিষেধ করিলেন না। কারণ মহাদেব অতি জিতেন্দ্রিয় পুরুষ ছিলেন। মহাপুরুষগণের মন সাধারণের মত চঞ্চল নহে। যে সকল কারণে সাধারণ লোকে চঞ্চল হইয়া উঠে, মহাপুরুষগণ তাহাতে ভ্রুক্ষেপও করেন না। মহাপুরুষ-প্রকৃতির লক্ষণই এই। পার্ব্বতী প্রতিদিন শিবের পূজার জন্য ফুল স্নানের জন্য জল আনিয়া দিত, যজ্ঞের স্থান পরিষ্কার করিয়া রাখিত।

(২২)

धुनी जगहमें बैठकर, सामने एक अग्निका कुण्ड

जलाया। जप, प्रचण्ड सूर्य, चारों ओर जलती हुई आग! दूसरा मनुष्य होनेसे अग्निकी गर्मीसे ही जल जाता! ऐसी कठोर अवस्थामें उन्होंने, ध्यान आरम्भ किया।

महादेव स्वयं ही भगवान (हैं), उनका ध्यान करके कितने ही मनुष्य कृतार्थ हो जाते हैं। महादेव स्वयं मङ्गलमय (हैं), वे सभोंका मङ्गल विधान करते हैं। वे किस लिये ध्यान करने बैठे (हैं), वह हम तुम नहीं समझ सकते। देवतागण जो सब काम करते हैं, वह क्या तुम हम समझ सकते (हैं)? मनुष्यकी ज्ञान बुद्धि बहुत कम (है)। इसी ज्ञान द्वारा ईश्वरके कार्यकलापका कारण नहीं निर्देश किया जाता।

पर्वतराज हिमालयने जिस समय सुन पाया कि भगवान महादेव अपने राज्यमें आ पहुँचे हैं, उस समय उनके आनन्दकी और सीमा न रही। उन्होंने पशुपतिके पास जाकर विनीत वचनसे उनकी अभ्यर्थना की। मकानपर लौटकर उन्होंने पार्वती और उसकी जया-विजया नामकी दोनों सखियोंसे कहा "तुम सब रोज़ जाकर देव-देव पशुपतिकी सेवा करो।" दूसरे दिनसे पार्वती पशुपतिकी सेवामें लगी। पार्वती स्त्री (है), युवति (है) ऐसी अवस्थामें तपस्याके स्थानमें जानेसे तपस्यामें विघ्न हो सकता, यह समझकर भी महादेवने पार्वतीको मना नहीं किया; कारण महादेव बड़े जितेन्द्रिय पुरुष थे। महापुरुषगणका चित्त साधारण मनुष्योंकी भाँति चंचल नहीं (है)। जिन सब कारणोंसे

साधारण मनुष्य चंचल हो उठते हैं. महापुरुषगण उनपर भ्रूक्षेप भी नहीं करते। महापुरुष प्रकृतिका लक्षण यही है। पार्वती प्रतिदिन शिवकी पूजाके लिये फूल और स्नानके लिये जल ला देती और यज्ञका स्थान साफ़ कर रखती (थी)।

चौंतीसवाँ पाठ।

পাত্রী = स्त्री　　　　আনয়ন করা = लाना
অনুসন্ধান = खोज　　　　সুতরাং = इसलिये
কোথাও = कहीं भी　　　　মিলিয়া = मिलकर
প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন　　　　ঠিক = ठीक
= प्रलय मचा सकते हैं　　　　পুনরায় = फिर

(৩৪)

সতীর দেহত্যাগের পর হইতেই দেবগণ মহাদেবের জন্য একটী উপযুক্ত পাত্রীর অনুসন্ধান করিতেছেন। সতী যেরূপ গুণবতী ও রূপবতী ছিলেন, ঠিক ঐরূপ একটি কন্যা পাইবার জন্য দেবগণ কত পরিশ্রম করিতেছেন কত দেশ বিদেশ ঘুরিতেছেন কিন্তু কোথাও ঐরূপ একটি কন্যা পাওয়া যাইতেছে না। মহাদেব ত স্ত্রীবিয়োগের পর হইতে সংসার বাসনা ত্যাগ করিয়া সন্ন্যাসী সাজিয়াছেন। তাঁহাকে আবার গার্হস্থ্যধর্ম্মে আনয়ন করা দেবগণের প্রধান উদ্দেশ্য হইলেও, তাঁহারা সাহস করিয়া মহাদেবের নিকট সে কথা বলিতে পারেন না। তাঁহারা জানেন যে মহাদেব ক্রুদ্ধ হইলে সংসারে প্রলয় ঘটাইয়া ফেলিতে পারেন। সুতরাং তাঁহারা সকলে

মিলিয়া ঠিক করিলেন যে, একটি সুন্দরী কন্যার সহিত মহাদেবের বিবাহ সংঘটিত হইলে, পশুপতি নিজেই সন্ন্যাস ত্যাগ করিয়া পুনরায় গৃহস্থ হইবেন। এমন সময় এক দিন নারদ মুনি আসিয়া সংবাদ দিলেন যে, শিবের উপযুক্ত পাত্রী এত দিনে পাওয়া গিয়াছে। পর্ব্বতরাজ হিমালয়ের কন্যা পার্ব্বতীর ন্যায় গুণবতী ও রূপবতী রমণী স্বর্গে, মর্ত্তে, কোথাও আর নাই। সুতরাং ইহার সহিতই মহাদেবের বিবাহ দিতে হইবে। মহর্ষির কথা শুনিয়া দেবগণ খুব আনন্দিত হইলেন। কিন্তু তাঁহাদের মধ্যে কেহই সাহস করিয়া শিবের নিকট বিবাহের প্রস্তাব করিতে সম্মত হইলেন না।

(३४)

सतीके देहत्यागके बादसे ही देवगण महादेवके लिये एक उपयुक्त पात्रीकी खोज करते हैं। सती जैसी गुणवती और रूपवती थीं, ठीक इसी तरहकी एक कन्या पानेके लिये देवतागण कितना परिश्रम करते हैं, कितने देश विदेशमें घूमते हैं, परन्तु कहीं भी ऐसी एक कन्या नहीं पाई जाती है। महादेव तो स्त्रीवियोगके बादसे संसारवासनाको त्याग करके सन्यासी बने हैं। उनको फिर गार्हस्थधर्ममें लाना देवताओंका प्रधान उद्देश्य होनेपर भी वे साहस करके महादेवके पास यह बात कह नहीं सकते। वे जानते हैं कि महादेव क्रुद्ध होनेपर संसारमें प्रलय मचा दे सकते हैं। इसलिये उन सभोंने मिलकर ठीक किया कि एक सुन्दरी कन्याके

साथ महादेवका विवाह होजानेसे पशुपति स्वयं ही सन्यास छोड़कर फिर गृहस्थ होंगे। ऐसे ही समय एक दिन नारद मुनिने आकर समाचार दिया कि, शिवकी उपयुक्त पात्री इतने दिनोंमें पाई गई है। पर्वतराज हिमालयकी कन्या पार्वतीकी भाँति गुणवती और रूपवती रमणी स्वर्गमें, मर्त्तमें कहीं भी और नहीं है। इसलिये इसके साथ ही महादेवका विवाह करना होगा। महर्षिकी बात सुनकर देवगण खूब आनन्दित हुए, परन्तु उनमेंसे कोई भी साहस करके शिवके पास विवाहका प्रस्ताव करनेमें सम्मत न हुए।

नरसिंह प्रेस

कलकत्ते की छपी हुई मनुष्यमात्रके देखने योग्य अपूर्व्व और सर्व्वोत्तम पुस्तकें ।

पाठक! नीचे उन पुस्तकोंका विज्ञापन दिया गया है जो हिन्दी संसारमें अचरजभरा काम कर रही हैं। कितने ही अन-पढ़ इन्हें पढ़कर विद्वान हुए और होते जाते हैं। यह छापाखाना और कम्पनी केवल किताबें बेचकर लाभ उठानेके लिये नहीं बल्कि संसारमें विद्या फैलाने और सर्व-साधारणको लाभ पहुँचानेके लिये खोले गये हैं। ध्यान रहे कि इस प्रेसकी छपाईकी सुन्दरता, पुस्तकोंकी उपयोगिता और काम-धन्धेकी सफ़ाई जगतमें प्रशंसनीय हो रही है। आशा है,—आपलोग एकबार जाँच करेंगे।

स्वास्थ्यरक्षा या तन्दुरुस्तीका बीमा।

संसारमें स्वास्थ्य अर्थात तन्दुरुस्तीसे बढ़कर कोई पदार्थ नहीं है। संसारमें जितने काम हैं सभीके लिये तन्दुरुस्त

रहनेकी सब [illegible]अधिक ज़रूरत है, हमारी स्वास्थ्य-रक्षा उन्हीं भेदोंको बताती है, जिससे मनुष्य तन्दुरुस्त रहकर संसारके सब काम कर सकता है। इसमें कोकशास्त्रके वे भेद जिनके लिये लोग कितने ही रुपये खर्च किया करते हैं, बड़ी सरलतासे समझा दिये गये हैं। साथ ही आज़माए हुए नुसख़े, चुटकुले, कितनीही मजेदार दवाएँ, बहुतसी ज़रूरी रङ्गीन बातें जिनसे बहुतही ज्यादा लाभ और सुख मिलकर इच्छा पूरी होती है इसमें साफ़ साफ़ लिख दी गई हैं। सच तो यह है कि यदि संसारके सभी सुख लूटने हों, यदि अपनी प्राणवल्लभाके प्रियतम बनना हो, यदि मोटी ताज़ी बुद्धिमती सन्तान की इच्छा हो और यदि डाक्टरोंको व्यर्थ पैसा न देना हो तो लाख रुपयोंका यह ग्रन्थ थोड़े ही दाममें ज़रूर ज़रूर मँगाकर पढ़िये। इससे वे सभी बातें मालूम हो जायँगी जो हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मालूम हो सकती हैं। दाम १॥) डाकखर्च ।) सुन्दर मनमोहनी जिल्दवालीका दाम २) डाकखर्च ।=)

देखिये "जासूस" क्या लिखता है:—

"कोकशास्त्रकी जिन बातोंके लिये आजकल लोग पैसा और समय खोकर, ठगे जाते दीखते हैं, उनकी उपयोगी और जानने योग्य बातोंकी इस पुस्तकमें लिखकर ग्रन्थकारने बड़ा काम किया है।"

है किसीसे सहायता लेनेकी आवश्यकता नहीं, स्कूल जानेका प्रयोजन नहीं जिस समय आपको फुरसत मिले उसी समय यह पुस्तक पढ़िये, थोड़े ही समयमें आपको अंगरेज़ीका ज्ञान हो जायगा।

देखिये "नारद" लिखता है :—

जो एक अक्षर भी अंगरेज़ी नहीं जानते वे भी इस किताब से थोड़े ही दिनोंमें अंगरेज़ी सीख सकते हैं।

दूसरा भाग।

व्याकरण वह विद्या है, जिसके बिना भाषा कभी शुद्ध नहीं होती और न भाषाका पूरा पूरा ज्ञान ही होता है। इसलिये जो महाशय अंगरेज़ी-शिक्षाका पहिला भाग पढ़ चुके हों उन्हें यह दूसरा भाग अवश्य ही पढ़ना चाहिये। यह उनकी भाषाको शुद्ध कर देगा, अंगरेज़ीकी लियाक़तको बढ़ा देगा और अंगरेज़ी व्याकरण (English Grammar) के भेद अच्छी तरह समझा देगा। इस भागके पढ़जाने वालोंके लिये चिट्ठियाँ लिखना, पढ़ना, अँगरेज़ी अख़बार पढ़ना और बोलना बिल्कुल आसान होजायगा। दाम १) डाकखर्च ≋)

देखिये "ब्राह्मण सर्वस्व" लिखता है :—

अंगरेज़ी सीखनेवालोंके लिये यह पुस्तक विशेष लाभदायक है; क्योंकि अंगरेज़ी व्याकरण सरल रीतिसे इसमें समझाया गया है। इस तरहकी दूसरी पुस्तक हमारे देखनेमें नहीं आई।

देखिये "भारतजीवन" बनारससे लिखता है:—

"यथार्थ में यह पुस्तक जिन्दगीका बीमा कहलाने योग्य है। प्रत्येक गृहस्थको इसकी एक एक प्रति रखनी चाहिये।"

अंगरेजी शिक्षा।

प्रथम भाग।

(पाँचवीं आवृत्ति)

आजकल बिना अङ्गरेज़ीके काम नहीं चलता। यह वही किताब है, जो थोड़ीसी हिन्दी जाननेवालोंको बिना उस्तादके थोड़े ही दिनोंमें अङ्गरेज़ी सिखा देती है। केवल इसके पहिले भागको पढ़ लेनेसेही तार लिखना, चिट्ठियोंपर पता लिखना, रसीद हुण्डियाँ तथा मामूली अर्ज़ी लिखना और साधारण अङ्गरेज़ी बोलना, महीने दो महीनेमें ही आ जाता है। इस पुस्तकको पढ़कर व्यापारी, रेलमें, तारमें, डाकघरमें तथा छोटे छोटे कारख़ानोंमें काम करनेवाले बहुत ही ज़ियादा नफ़ा उठा सकते हैं। छपाई सफ़ाई मनमोहनी है। १५० पृष्ठोंकी पुस्तकका दाम ।) डाकखर्च ‍)

देखिये "हिन्दी-बंगवासी" लिखता है:—

हिन्दी जाननेवाले इस पुस्तकके सहारे मात्र ही अंगरेजी सीख सकते

देखिये "भारतमित्र" लिखता है ;—

व्याकरण जितना लिखा है वह इतना स्पष्ट है कि मामूली से मामूली आदमी भी समझ सकता है। उच्चारणके भेद विस्तार से समझाये हैं मुहावरे भी दिये हैं, बिना शिक्षकके जो हिन्दी-पाठक अंगरेज़ीका साधारण ज्ञान प्राप्त करनेके इच्छुक हैं वे इस पुस्तकसे अपनी इच्छा पूरी कर सकते हैं।

देखिये "हितवार्त्ता" लिखती है :—

इसमें अंग्रेज़ी व्याकरणके और उच्चारणके साधारण नियम हिन्दीमें दिये गये हैं, उपयोगी शब्दोंका अच्छा संग्रह किया गया है। बड़े बड़े वाक्य बनाने तककी योग्यता इससे प्राप्त हो सकती है।...पुस्तक कामकाजी आदमियोंके बड़े कामकी है। हमने इस प्रकारकी जितनी पुस्तकें देखी हैं उनमें यह सबसे अच्छी है। कागज़ और छपाई भी उत्तम है।

तीसरा भाग।

यह तीसरा भाग व्याकरण-सम्बन्धी विशेषण (Adjective) और सर्वनाम (Pronoun) के भेद, प्राणियोंकी बोलियाँ, संज्ञा और विशेषणके चुने हुए जोड़ और शब्दोंके संक्षिप्त रूप (Abbreviations) से भरा है। ये वे चीज़ें हैं जिनको, अखबार, नावल, तथा दूसरे २ विषयोंकी किताबें और ज़रूरी लिखने पढ़नेमें हमेशः ज़रूरत पड़ा करती है। यह भाग अंगरेज़ी भाषा सीखनेमें बहुत ही ज़ियादा सहायता देकर शब्दोंका हेरफेर खूब समझा देता है। आकार दूसरेसे भी, थोड़ा है। दाम १) डाकखर्च ≈)

गहमरका "जासूस" लिखता है :

"इसी सिलसिलेमें यह तीसरा भाग बना है, इन भागोंसे शेष रही बहुत सी उपयोगी और आवश्यक बातें इस खण्डमें दी गयी हैं।"

देखिये "हितवार्त्ता" लिखती है :—

पुस्तक बहुत कामकी है यदि कोई इसका ध्यानसे अभ्यास करे तो अंगरेजी भाषा में उसका प्रवेश हो जा सकता है। आशा है पहले दो भागोंके समान ही इसका आदर होगा।

चौथा भाग।

इस भागमें अंगरेज़ी व्याकरण समाप्त करके और भी जितनी ज़रूरी बातें, चिट्ठी पत्रीके कायदे, वगैरह जो कुछ बाकी रह गया था सभी दे दिया गया है। कितने ही उपयोगी विषयोंसे यह भाग भरा है। हम दावेके साथ कह सकते हैं कि अंगरेज़ी शिक्षा चारों भागोंका ध्यान से पढ़कर याद कर लेनेवाला अगर अँगरेज़ोंकी चिट्ठियाँ, अखबार, लिखना, पढ़ना न कर सके तो दूना दाम वापिस देंगे। दाम १) डाक महसूल ॥) ।

देखिये "हितवार्त्ता" लिखती है :—

"इन चारों भागोंका अध्ययन यदि मन लगाकर किया जाय तो अंगरेज़ी व्याकरण का साधारण ज्ञान अच्छा हो जायगा।"

नरसिंह प्रेस २०१ हरीसन रोड, कलकत्ता।